



मासिक कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-8 | अंक-10

मई-2025

पृष्ठ-32

मूल्य : ₹ 20.00

OPERATION SINDHUR



समाज के गौरव



जितेन्द्र कुमावत
(ICS)



कमलेश कुमावत
(ICS)



ज्योति कुमावत
(ICS)

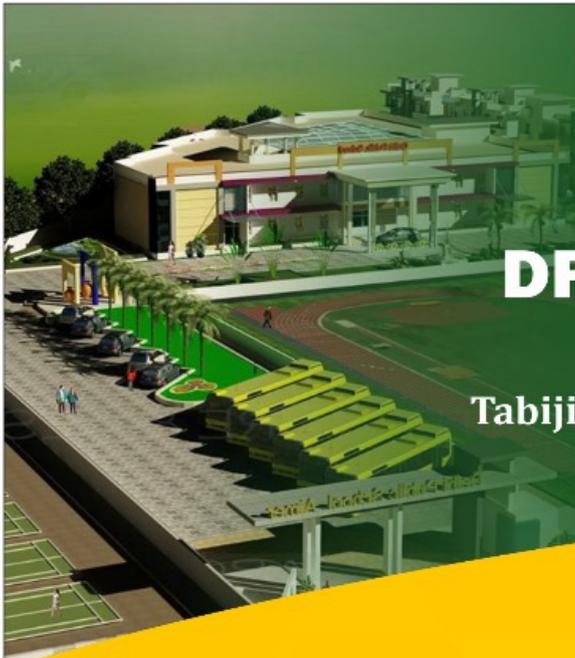




DPS AJMER

Sr. Sec. School

Tabiji Farm Road, Ajmer



ESTABLISHING

The Right Environment

We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.



SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman

Archery & International
Level Shooting Range



Skating Rink



Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"



Our Activities



Karate Club

We have won Karate Championship
at District, State & National Level.

Horse Riding Club

Won Laurels at the National Level



Art & Craft



📍 Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer

🌐 Web: www.dpsajmer.in ✉ E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प.,
दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	: जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
अध्यक्ष	: रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
उपाध्यक्ष	: रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
सचिव	: श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	: लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	: सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
	: रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
	: चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
	: मोहन लाल कुमावत	मो. 9887557425
मुख्य सलाहकार	: सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
सलाहकार	: गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322,
सह-सम्पादक : रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल
9408093778 तथा मनीष कुमावत 9660702083, रवि कुमावत
9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया
9351680888, **पदेन सदस्य** : अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया
9413335998, सुरेन्द्र मारोडिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330,
राजेश कुमावत (मारोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती
शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया
9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष** : खेमचंद खड्गटा 9829140629 **विधि सलाहकार**
: राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल मो. 9425234397 **दिल्ली** : राधेश्याम
घासोलिया मो. 9818711580 **सूरत** : शुभकरण किरोड़ीवाल
मो. 9898097444 **वापी** : कृष्णगोपाल मो. 9824892299 **मुम्बई** : विजय
किरोड़ीवाल, मो. 9867177188 **जींद (हरियाणा)** : बलवीर सिंह वर्मा
मो. 9355322301 **कोटा** : चन्द्र प्रकाश कांकर मो. 9214983402 **सीकर** :
रामगोपाल भोड़ीवाल मो. 9610784657 **उदयपुर** : घनश्याम पटवा
मो. 9460913044, जगदीश मामोडिया मो. 9024805687 **ब्यावर** : नरेन्द्र
आर्य मो. 8107944493, रवि बेडवाल मो. 8290303003 **बगरू** : चैनसुख
बड़ीवाल मो. 9929012957 **सांगानेर** : सोहनलाल अजमेरा मो.
9636860812 **इंदौर** : नेमीचंद कारवाल मो. 9993998645 **किशनगढ़** :
प्रभुदयाल तुनगरिया 9680931428

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

**सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ट संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000,
10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650**

**विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर
1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700**

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय
फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ट संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10
वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन निःशुल्क प्रकाशित किये जायेंगे।

6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन निःशुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562
यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385
यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया
व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम.
कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम,
जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प.,
दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय



विश्व पर्यावरण दिवस, जो 5 जून को आता है और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जो हर वर्ष 21 जून को मनाया जाता है, दोनों ही दिन हमें प्रकृति और स्वयं के साथ हमारे गहरे संबंध पर विचार करने का अवसर प्रदान करते हैं। ये दोनों दिवस एक स्वस्थ और टिकाऊ भविष्य के लिए महत्वपूर्ण संदेश देते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस हमें हमारे ग्रह के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सोचने और पर्यावरण की रक्षा के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जैव विविधता का नुकसान आज दुनिया के सामने सबसे बड़ी समस्याएं हैं। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब हम सभी मिलकर काम करें और एक स्थायी जीवन शैली अपनाएं।

योग, एक प्राचीन भारतीय पद्धति, मन, शरीर और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने पर केन्द्रित है। यह हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने आंतरिक और बाहरी वातावरण के साथ सद्भाव में रह सकते हैं। योगाभ्यास न केवल हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि हमें प्रकृति के प्रति अधिक जागरूक और संवेदनशील भी बनाता है। जब हम अपने भीतर शांति और संतुलन का अनुभव करते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से अपने आसपास के वातावरण का सम्मान और संरक्षण करने के लिए प्रेरित होते हैं।

योग और पर्यावरण संरक्षण आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। योग के सिद्धांत, जैसे अहिंसा (गैर-हानि) और अपरिग्रह (गैर-लोभ), हमें प्रकृति के प्रति करुणा और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में मदद करते हैं। जब हम अनावश्यक उपभोग से बचते हैं और प्राकृतिक संसाधनों का सम्मान करते हैं, तो हम पर्यावरण पर अपने नकारात्मक प्रभाव को कम करते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमें याद दिलाते हैं हमारे ग्रह का स्वास्थ्य और हमारा स्वास्थ्य आपस में अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। एक स्वस्थ वातावरण हमारे शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए आवश्यक है, और एक शांत और संतुलित मन हमें पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक और जिम्मेदार बनने में मदद करता है।

इस वर्ष, आइए हम इन दोनों महत्वपूर्ण दिनों को केवल रस्मों के रूप में न मनाएं, बल्कि एक स्वस्थ और टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए ठोस कदम उठाएं। योग को अपनी दैनिक जीवनशैली का हिस्सा बनाएं और पर्यावरण की रक्षा के लिए निरन्तर छोटे-छोटे प्रयास करें। यही वह सच्चा तरीका है जिससे हम स्वयं के साथ और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं।

आजकल सामाजिक संस्थाओं में भी कुछ पदाधिकारी सामाजिक प्रदूषण फैला रहे हैं ऐसा नहीं कि समाज उन्हें पहचानता नहीं समय आने पर उन्हें जवाब अवश्य मिलता है। अतः निवेदन है कि सामाजिक प्रदूषण न फैलावे और समाज भी उन्हें ऐसा करने से रोके।

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3	रूप सिंह कुमावत के संयोजन में इण्डो-नेपालकॉन सम्पन्न	11
कमलेश कुमावत का आईसीएस परीक्षा में चयन	4	संत श्री गरवाजी का मेला 20 जून को	11
हंसराज कुमावत असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्त	4	बाबूलाल मारोटिया को वरिष्ठ नागरिक राष्ट्रीय पुरस्कार	11
समाज प्रतिभा डॉ. हर्षिता बासनीवाल	5	मातृत्व दिवस पर एक विशेष पहल	11
रामस्वरूप कुमावत ने छुड़ाए दुश्मन के छक्के	5	मानव जीवन में परमानन्द कैसे लाए	12
घनश्याम निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुने	5	संयुक्त परिवार-एक संपूर्ण पाठशाला	12
कक्षा 12 एवं 10 सीबीएसई में उत्तीर्ण विद्यार्थी	6	अरेंज मैरिज : अभिभावकों की महती भूमिका	13
स्वामिनी सेवा संस्था का श्री श्याम भेजनात्स	6	दृष्टिये वजह मुस्कराने की-6	14
समाज की महिलाओं ने जरूरतमंद बच्चों के बीच मनाया मातृ दिवस	7	गर्मी के मौसम में आहारचर्या,	15
आर्टिस्ट रामसिंह राजोरिया ने मुख्यमंत्री को दिखाई सुक्ष्मतम गीता	7	ग्रीष्म ऋतु	15
कु. क्ष. विकास समिति बरकतनगर द्वारा देवप्रतिष्ठा कार्यक्रम 7-8 जून को	7	बेल का जूस पीयें गर्मी भगायें	16
राजेश कुमावत बने भाजपा महासचिव	7	कपालभाती प्राणायाम के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव	16
जनगणना के संबंध में समाज बन्धुओं से अपील	7	हिंदू धर्मग्रंथों का सार, जानिए किस ग्रंथ में क्या है ?	17
ड्रैगन बॉट एवं कयाकिंग प्रतियोगिता में कुमावतों ने दिलाए पदक	8	जब दूसरों को तौलें, तो पहले स्वयं को तराजू में रखें	18
नौ वर्षीय ध्रुव का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में	8	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: तन और मन के स्वास्थ्य का अद्भुत संगम	19
सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.) का अधिवेशन	8	रामराज्य में पर्यावरण-नीति	21
बड़े हथियारों की ट्रेनिंग लेने वाली पहली महिला मेजर ऊषा कुमावत	9	भयावह होती पर्यावरण की स्थिति	23
साण्डेराव में विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजित	9	विशिष्ट संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि	24
वधु पक्ष ने वर पक्ष को तुलसी का पौधा किया भेंट	9	विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
चित्तौड़गढ़ में सामुहिक विवाह सम्पन्न 11 जोड़े परिणयसूत्र में बंधे	9	पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें	26
चाकसू कुमावत समाज का सामुहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न	10	मोहन बालोदिया को लाइफटाईम अचिवमेंट ट्राफी	27
ऑपरेशन सिंदूर	10	मुरली नाईक ऑपरेशन सिंदूर में शहीद	28
एक रुपया नारियल लेकर की शादी	10	110 वर्षीय आनन्दी बाई पालड़िया का निधन	28
रिमझिम कुमावत ने राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान	11	विज्ञापन	29-30

कमलेश कुमावत का आईसीएस परीक्षा में चयन



श्री कमलेश कुमावत पुत्र श्री भगवान लाल कुमावत निवासी जयपुर, राजस्थान का भारतीय सिविल सेवा परीक्षा-2024 में 608वीं रैंक पर चयन हुआ है। श्री कमलेश ने राजस्थान विश्वविद्यालय से Msc. रसायन शास्त्र से की है। अपनी कड़ी मेहनत, लगन तथा अपने मैन्टर्स से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर इन्होंने वाणिज्य एवं लेखा विषय लेकर भारतीय सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की तथा सफलता प्राप्त की है। इन्हें 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. ज्योति कुमावत रैंक 433 तथा श्री जितेन्द्र कुमावत रैंक 412 का विवरण फोटो सहित पिछले अंक में प्रकाशित किया जा चुका है। उन्हें भी पुनः बधाई।



डॉ. पूजा कुमावत पुत्री श्री छीतरमल कुमावत निवासी कालख छतरियां, जोबनेर, जयपुर को एमबीबीएस पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई।

हंसराज कुमावत असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्त

दांतरामगढ़ के हंसराज कुमावत ने राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राजनीति विज्ञान विषय की असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा-2023 में सफलता प्राप्त की है। श्री हंसराज ने बिना कोचिंग स्वयं के अध्ययन से यह मुकाम हासिल किया है। उनकी इस सफलता के पीछे नियमित 8-10 घंटों का अध्ययन तथा रिवीजन करना रहा है। उनकी पत्नी उर्मिला एवं माता-पिता तथा विद्यालय स्टाफ का इसमें पूरा सहयोग रहा। गांवों में रहकर सीमित संसाधनों से चयनित होकर इन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इन्हें हार्दिक बधाई।



साक्षी कुमावत को Msc. में गोल्ड मैडल

राजस्थान यूनिवर्सिटी की 34वें कॉन्वोकेशन में साक्षी कुमावत को Msc. (Environment Science) वर्ष-2023 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर गोल्ड मैडल देकर सम्मानित किया गया है। बधाई





समाज प्रतिभा डॉ. हर्षिता बासनीवाल

हर्षिता बासनीवाल का जन्म सितम्बर, 1996 में समाजसेवी श्री प्रमोद बासनीवाल-श्रीमती रश्मि वर्मा के परिवार में हुआ। श्री प्रमोद राजस्थान हाउसिंग बोर्ड में AAO के पद से सेवानिवृत्त हैं तथा हर्षिता का पितृ पक्ष और मातृ पक्ष का परिवार उच्च शिक्षित रहा है। बचपन से ही हर्षिता सुन्दर, सुशील और मेधावी रही हैं। प्रारम्भिक शिक्षा सेंट जोसफ स्कूल तथा उसके बाद सेंट जेवियर स्कूल से हुई। उनकी प्रतिभा को देखकर प्रिंसिपल ने इन्हें साइंस विषय लेने का सुझाव दिया। इनकी स्वयं की तथा माता की इच्छा के अनुसार इन्होंने चिकित्सा क्षेत्र में जाने का निर्णय लिया और वर्ष 2015 से 2019 तक महात्मा गांधी मेडीकल कॉलेज से MBBS किया। ये अन्य गतिविधियों में भी हिस्सा लेती थीं और 2016 में महात्मा गांधी

मेडिकल कॉलेज की मिस मेडिकल कॉलेज से सम्मानित हुईं। कोविड-19 के समय हर्षिता ने बनीपार्क तथा आमेर चिकित्सालय में कोविड चिकित्सक के रूप में अपनी सेवाएं दीं। फिर फोर्टिज एस्कोर्ट हॉस्पिटल में सेवाएं देते हुए इनका चयन सीआरपीएफ में हो गया। कठिन शारीरिक प्रशिक्षण माउंट आबू कैम्प में हुआ जो रोमांचकारी रहा। पिछले वर्ष प्रयागराज महाकुंभ में आपकी सेवाएं ली गई थीं। इस दौरान मुश्तैदी से सेवाएं देते हुए वहां पहुंचे परिवारजन, रिश्तेदारों तथा समाजजनों को इन्होंने वीआईपी घाट पर स्नान कराने में सहयोग किया। इनकी सेवाओं से ये लोग बहुत ही प्रसन्न और संतुष्ट हुए। इस दौरान ही हर्षिता ने अपना प्रोबेशन पूर्ण किया तथा देश के लिए अपनी सेवाएं दे रही हैं।

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका परिवार की ओर से बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

रामस्वरूप कुमावत ने छुड़ाए दुश्मन के छक्के

बहादुरी को सम्मान: ऑपरेशन सिंदूर में अनंतपुरा के जवान ने ध्वस्त किया आतंकी कैंप

जोबनेर. श्रीकर्ण नरेंद्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का सीना उस समय गर्व से चौड़ा हो गया जब उसके आंगन में पड़े हुए लाल ने ऑपरेशन सिंदूर में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी अनंतपुरा के सपूत रामस्वरूप कुमावत ने आतंकी कैंप को ध्वस्त कर दिया। रामस्वरूप कुमावत वर्तमान में बीएसएफ में हैं। वे हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा रहे। वर्तमान में वे जम्मू के अखनूर सेक्टर में तैनात हैं। ऑपरेशन सिंदूर के तहत

उन्होंने और उनकी टीम ने लूणी में स्थित आतंकी कैंप को ध्वस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी इस अद्वितीय बहादुरी के लिए बीएसएफ के उच्च अधिकारियों और गृह मंत्रालय ने उनकी प्रशंसा की साथ ही जम्मू के आईजी द्वारा उनकी टीम को 50 हजार का विशेष पुरस्कार दिया है। बधाई।



घनश्याम निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुने

राजस्थान क्षत्रिय कुमावत युवा शक्ति की प्रदेश स्तरीय आम सभा अशोक नगर में हुई। सर्वसम्मति से घनश्याम साबलिया को निर्विरोध प्रदेश अध्यक्ष चुना गया।



इसमें समाज में फैली कुरीतियों बालिका शिक्षा, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक उन्नति पर चर्चा हुई। सभा में प्रदेश अध्यक्ष कार्यकारिणी सदस्य शामिल रहे। रतन नंदोलिया, महामंत्री राजेंद्र मुरलीधर बत्रा को कोषाध्यक्ष राजोरिया, कोषाध्यक्ष

राकेश बनाया गया। प्रदेश उपाध्यक्ष देवातवाल, पुष्कर, कोर कमेटी कन्हैयालाल कुमावत, जिला सदस्य भंवरलाल उदयवाल, टीकम प्रभारी रघुनाथ कुमावत, जिला मावर और सभी जिला महामंत्री गिरिराज कुमावत, कोषाध्यक्ष मदन कुमावत, राजेश, रामबाबू कुमावत, वरिष्ठ समाजसेवी हजारीलाल कुमावत, चिरंजीव कुमावत, मनोज, पूर्व जिला अध्यक्ष गिरिराज शामिल रहे।

तरुण कुमावत
को अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश बनने की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।



अनुज घनश्याम कुमावत निवासी परासोली के एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान) पद पर 98वीं रैंक प्राप्त कर चयन होने पर बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं



कक्षा 12 एवं कक्षा 10 सीबीएसई में उत्तीर्ण हुए समाज के विद्यार्थियों को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

						
सुगना कुमावत 99.60	दृष्टि सिंह नोखवाल 98.80	प्रिया कुमावत 98.00	कनिका कुमावत 98.00	जैस्मीन कुमावत 98.00	यश्वनी कुमावत 96.00	लावण्या कुमावत 96.00
						
परीक्षित कुमावत 95.80	चेरिशा कुमावत 95.00	लक्षिका कुमावत 89.00	निशान्त कुमावत 88.80	रेणु कुमावत 85.10	निलेश कुमावत 80.00	आंशी कुमावत 98.60
						
सुधिका कुमावत 94.40	खुशी कुमावत 94.40	युवराज कुमावत 93.80	नेहल कुमावत 93.80	समीक्षा कुमावत 93.20	कुणाल कुमावत 89.40	ईशान कुमावत 89.00
						
स्तुती कुमावत 88.60	शुभांगी कुमावत 86.40	रूद्राक्षी कुमावत 86.00	आर्वी कुमावत 82.00	आयान कुमावत 80.00	भानुजा कुमावत 80.00	आशियाना बालोदिया 80.00

10वीं

पत्रिका प्रकाशन तक उत्तीर्ण हुए विद्यार्थियों की प्राप्त सूचना के आधार पर यह प्रकाशन किया गया है। विलम्ब से प्राप्त सूचनाओं तथा आगे आने वाली सूचना के आधार पर विद्यार्थियों के परिणामानुसार सूचना का प्रकाशन आगामी अंक में किया जाना प्रस्तावित है। अभिभावकगण, समाजबंधुओं से निवेदन है कि वे कृपया विद्यार्थियों के परिणाम मय फोटो व अंकतालिका के अतिशीघ्र वाट्सएप नं. 9460870125 पर देने का कष्ट करें।

स्वामिनी सेवा संस्था का श्री श्याम भजनोत्सव

स्वामिनी सेवा संस्था, सोडाला, जयपुर के तत्वाधान में श्री श्याम मित्र मंडल का 15वां वार्षिक श्री श्याम भजनोत्सव 17 मई को धूमधाम से संपन्न हुआ। सिविल लाईन विधायक गोपाल शर्मा, नीरज कुमार शर्मा, मनोज खांडल, विमल शर्मा, समाज सेवी एवं संस्था के पदाधिकारी अशोक कुमावत, गोविंद कुमावत, गुरुदयाल वर्मा, महेंद्र कुमावत, रमेश कुमावत ने भजनों का शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्याम प्रभु की भव्य एवं मनोरम झांकी सजाया गयी। गायक कलाकारों ने भजनों से श्याम बाबा को रिझाया और भक्तों ने भाव विहार होकर उन्हे सुना।



स्वामिनी सेवा संस्था मानवता की सेवा में समर्पित संस्था है तथा प्रति अमावस्या सवाई मानसिंह अस्पताल के बांगड वार्ड में निःशुल्क भोजन सेवा मरीज व जरूरतमंदों को देती है।

समाज की महिलाओं ने जरूरतमंद बच्चों के बीच मनाया मातृ दिवस

जयपुर के कुमावत समाज की महिलाओं ने सुनीता नांदीवाल के नेतृत्व में सेवा भारती स्कूल में निराश्रित एवं जरूरतमंद बच्चों के बीच जाकर मातृ दिवस मनाया। उन्होंने वहां अध्ययनरत बेसहारा व जरूरतमंद बच्चों को स्टेशनरी वितरित की।



प्रशासन ने महिला समुह के इस कदम की प्रशंसा करते हुए कहा कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं रहे यह हमारे समाज का कर्तव्य है। ये बच्चे बड़े होकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ेंगे तथा समाज को भी इन पर गर्व होगा तथा समाजजनों के मन में संतोष होगा।

समाज सेवी महिलाओं के इस समुह ने बेसहारा व अनाथ बच्चों को भी अपनी ममता का प्यार दिया तथा बच्चे भी इन्हें अपने बीच पाकर भार विहोर हो उठे। संस्था संचालिका और स्कूल

ज्ञातव्य रहे कि संस्था संचालिका श्रीमती विमला कुमावत ने कचरा बीनने वाले और बेसहारा बच्चों को शिक्षा देकर बेमिसाल काम किया है, उन पर समाज को गर्व है।

आर्टिस्ट रामसिंह राजोरिया ने मुख्यमंत्री को दिखाई सुक्ष्मतम गीता

राजस्थान के माननीय माइक्रो आर्टिस्ट राम सिंह राजोरिया ने मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा की माइक्रो आर्टिस्ट राम सिंह राजोरिया ने भेंट करके उन्हें विश्व की सबसे सूक्ष्मतम हस्तलिखित श्रीमद्भगवतगीता के दर्शन कराए। जिसे देखकर मुख्यमंत्री ने गहरी श्रद्धा और प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही उन्हें चावल के एक अति सूक्ष्म दाने पर राम मंदिर की अद्भुत और सुंदर प्रतिमा भेंट करने का भी सौभाग्य



मिला। यह क्षण न केवल व्यक्तिगत रूप से गर्व का विषय रहा, बल्कि हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अद्वितीयता और आध्यात्मिकता को भी दर्शाता है। यह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और गौरव को आगे बढ़ाने की शक्ति प्रदान देगा। हाल ही में इन्होंने महामण्डलेश्वर गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज को अपनी यह सूक्ष्म गीता दिखाई जिसे उन्होंने भारतीय संस्कृति, भक्ति और कला के गहरे समर्पण का प्रतीक बताया।

कुमावत क्षत्रिय विकास समिति बरकतनगर द्वारा देवप्रतिष्ठा कार्यक्रम 7-8 जून को

कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर, टोंक फाटक, जयपुर द्वारा विनोबा बस्ती स्थित रामदेव मंदिर में 7 व 8 जून, 2025 को देव प्रतिष्ठा का कार्यक्रम रखा गया है। 7 जून को प्रातः 7 बजे आदर्शबस्ती, टोंक फाटक, शिव मंदिर से कलश यात्रा एवं मूर्तियों की रथ यात्रा प्रारम्भ होगी, जो 10 बजे विनोबा बस्ती

पहुँचेगी। प्रातः 11:15 से दोपहर बाद 3:15 बजे तक यज्ञ व हवन होगा। 8 जून, रविवार को प्रातः 7 बजे से मूर्तियों का महास्नान नेत्र विलोचन व प्राण प्रतिष्ठा की जायेगी। इसके बाद श्रृंगार, भोग व महाआरती का आयोजन होगा। सायं 4:30 बजे से अतिथिगणों व भामाशाहों का सम्मान एवं प्रसादी की जायेगी।

राजेश कुमावत बने भाजपा महासचिव



बेंगलूरु। मुख्यमंत्री बी एस यदयुरप्पा के निर्देशानुसार राजेश कुमावत को विजयनगर विधानसभा क्षेत्र के गालीआंजनैया स्वामी टेम्पल वार्ड 157 का भाजपा महासचिव नियुक्त किया गया है। गौरतलब है कि राजेश कुमावत मूलतः राजस्थान के पाली जिले के निमाज के रहने वाले हैं। बेंगलूरु में ये प्रवासी समाज में बेहद लोकप्रिय हैं। वे राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। इस अवसर पर कर्नाटक के आवासीय मंत्री वी सोमण्णा, भाजपा प्रदेश प्रधान कार्यदर्शी अश्वथनारायण, विजयनगर मंडल अध्यक्ष टी वी कृष्णा, उपाध्यक्ष आनंद बीएस, प्रधान कार्यदर्शी सी वी रामाजीनी, पूर्व पार्षद एच रविन्द्रा, यशवंत गौडा सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जनगणना के संबंध में समाज बन्धुओं से अपील

भारत सरकार द्वारा जातिगत जनगणना कराई जाना तय हुआ है। अतः आप सभी कुमावत समाज बन्धुओं एवं कुमावत समाज की सभी सामाजिक संस्थाओं से निवेदन है कि राष्ट्रीय जनगणना रजिस्टर में जनगणना करते समय आपके घर पर आने वाले राष्ट्रीय जनगणना अधिकारी को जाति के कॉलम में केवल **कुमावत** लिखवाना जरूरी है। ना कि कारीगर/चेजारा / मिस्त्री / खेतेंड कुम्हार / वर्मा / नायक / राजकुमार / बेलदार / सिलावट/ गोत्र। **कुमावत लिखवाने पर ही आपकी सही संख्या भारत सरकार तक पहुंच पायेगी।** इसी आधार पर भविष्य में आपको सभी पार्टियां, राजनैतिक प्रतिनिधित्व, सरकार की योजना में भागीदारी सुनिश्चित हो पायेगी।

ड्रैगन बॉट एवं कयाकिंग प्रतियोगिता में कुमावतों ने दिलाए पदक

भारतीय कयाकिंग एव कैनोइंग संघ व मध्यप्रदेश कयाकिंग एव कैनोइंग संघ के संयुक्त तत्वाधान मे दिनांक 24 से 28 अप्रैल 2025 तक राष्ट्रीय ड्रैगन बॉट व कयाकिंग एवं कैनोइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें राजस्थान की ड्रैगन बॉट टीम (जूनियर मिक्स 1000 मीटर) में राजस्थान की टीम ने रजत पदक जीता, इसमें मुख्य बात यह है की इस राजस्थान टीम में कुमावत समाज उदयपुर के 4 बच्चों ने राजस्थान को रजत पदक दिलवाने में अहम भूमिका



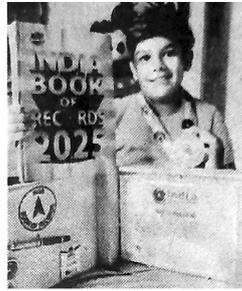
निभाई इसमें शगुन पुत्री श्री सुनील गोठवाल, सक्षम पुत्र श्री मुकेश गोठवाल, कनिष्का पुत्री श्री प्रमोद पालड़िया एव चार्वी पुत्री श्री कीर्तिश कुमावत सम्मिलित हैं।

वहीं कयाकिंग की प्रतियोगिता में सुश्री शगुन कुमावत ने कयाक-1 की 200 मीटर इवेंट में गोल्ड मैडल, कयाक-2 की 500 मीटर इवेंट में सिल्वर मैडल एवं कयाक-1 की 500 मीटर इवेंट में सिल्वर मैडल जीता है। सभी विजेताओं को बधाई।

नौ वर्षीय ध्रुव का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में

चित्तौड़गढ़। जिले से लेकर राज्य, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की प्रतियोगिता में 11 बार विजेता बनने पर 9 वर्षीय ध्रुव कुमावत का इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज हो गया। कुछ दिन पहले ही ध्रुव को यह अवार्ड मिला है।

निंबाहेड़ा में आमलिया बावजी स्थान के पास रहने वाले ध्रुव कुमावत राजस्थान संस्कृति एवं साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित उदयपुर रत्न सम्मान 2025 के तहत संभाग के शीर्ष 16 में सम्मानित हुआ। इससे पहले इंटरनेशनल अवेकस फ्लैश प्रतियोगिता 2024 दिल्ली में मेरिट विजेता, इंटरनेशनल विजुअल प्रतियोगिता 2024 दिल्ली में फर्स्ट रनरअप विजेता, इंटरनेशनल विजुअल 2023 प्रतियोगिता ऑनलाइन थर्ड रनरअप विजेता,



इंटरनेशनल फ्लैश प्रतियोगिता 2023 ऑनलाइन मेरिट विजेता, नेशनल विजुअल प्रतियोगिता 2024 दिल्ली में थर्ड रनरअप विजेता, नेशनल विजुअल प्रतियोगिता 2023 अहमदाबाद में मेरिट विजेता, स्टेट फ्लैश प्रतियोगिता 2024 जयपुर में चैंपियन, स्टेट लिसनिंग प्रतियोगिता 2024 जयपुर में चैंपियन, स्टेट विजुअल प्रतियोगिता 2024 जयपुर में फर्स्ट रनर अप, स्टेट विजुअल 2023 जयपुर में फर्स्ट रनर अप विजेता रहा। कम उम्र में इतनी प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर वंडर एज्युकेशन के ध्रुव का नाम 20 दिन पहले एडिटोरियल बोर्ड ऑफ इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा मंजूरी के बाद इंडिया बुक ऑफ इंडिया में दर्ज हुआ है। बहुत-बहुत बधाई।

सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.) का अधिवेशन

7-8 जून 2025 को कुमावत भवन चमालिसा धर्मशाला पुष्कर सम्पन्न होगा

सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा का अधिवेशन 7 व 8 जून 2025 को कुमावत भवन चमालिसा धर्मशाला पुष्कर राजस्थान में सम्पन्न होगा। अधिवेशन में सर्व कुमावत क्षत्रिय महा सभा के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय कार्यकारिणी, प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय पदाधिकारियों का चुनाव किया जायेगा। अधिवेशन में 7 जून 2025 को सायं 4 बजे सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग, अधिवेशन स्थल पर की जायेगी जिसमें सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के गठित होने के बाद किये गये कार्यों की विवेचना की जायेगी एवं आय-व्यय को अधिवेशन में रखने के लिए स्वीकृत किया जायेगा। अधिवेशन 8 जून 2025 को प्रातः 10.30 बजे शुरू होगा जिसमें समाज की व्याप्त कुरृतियों को समाप्त करने के संबंध में विस्तृत विचार विमर्श किया जायेगा। अधिवेशन में उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं में समाज के छात्र-छात्राओं द्वारा किस तरह से परीक्षा की तैयार कर अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करे उसके लिए विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा प्रकाश डाला जायेगा। केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों की योजनाओं का लाभ समाज को कैसे मिले, समाज के पुस्तैनी कार्यों को आधुनिक रूप

से समाज के युवाओं द्वारा कैसे किया जावे। समाज की महिलाओं की व्यावसायिक व राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी कैसे प्राप्त हो, उसके संबंध में भी विशिष्ट व्यक्तियों से मार्गदर्शन दिया जायेगा। अधिवेशन में सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के चुनाव सम्पन्न होने के बाद किये गये सभी कार्यों की विवेचना व आय-व्यय को अधिवेशन में रखकर स्वीकृत करवाया जायेगा। अधिवेशन में समाज के सभी वर्तमान व पूर्व विधायकों, राजनैतिक क्षेत्र में प्रशासनिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले वरिष्ठ समाज बन्धुओं का मार्गदर्शन समाज बन्धुओं को प्राप्त होगा। रात्रि 8 बजे तक निर्वाचित पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण होगा एवं पूर्व पदाधिकारियों से नव निर्वाचित पदाधिकारियों को कार्यभार सम्भलाया जायेगा। सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन में राजस्थान के सभी जिलों, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश के समाजबन्धु भाग लेंगे। कार्यक्रम संयोजक विमल कुमावत पूर्व उप महापौर एवं पूर्व मुख्य परामर्शदाता, चुनाव कार्यक्रम राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी रमेश चंद गैदर, सहायक चुनाव अधिकारी शिव दयाल कारीगर व पूरणमल अजमेरा होंगे।

बड़े हथियारों की ट्रेनिंग लेने वाली पहली महिला मेजर ऊषा कुमावत

बचपन से ही मंदसौर की ऊषा कुमावत ने सेना में जाना ठान लिया था। पर हालात अनुकूल नहीं रहे तो 17 साल की उम्र में विवाह किया और संतान को सेना में भेजने का मन बनाया। पर नियति ने दुर्घटना में पति और बीमारी ने बच्चों को छीन लिया। ऊषा ने इसके बाद फिर से आगे की पढ़ाई की और वर्ष 1995 में सीआरपीएफ में कांस्टेबल चयनित हुई। परिजनों ने दूसरी शादी की पर पति ने घर या नौकरी में से एक को चुनने को कहा। ऊषा ने देश सेवा को चुना। कश्मीर, कन्याकुमारी, असम, मणिपुर, नागालैण्ड जैसे सरहदी इलाकों में सेवाएं दीं। इन्होंने सपोर्ट वीपन्स



का प्रशिक्षण लिया और देश की ऐसी पहली महिला बनने का गौरव हासिल किया। वे पदोन्नत होकर लांसनायक, नायक और हवलदार (मेजर) बनीं। जब वे एएसआई के पद पर आई थी तो पिता ने अपने अंतिम क्षणों में इन्हें अपने पास बुलाया तो उन्होंने वर्ष 2018 में सेवानिवृत्ति ले पिता के प्रति कर्तव्य को निभाया।

उनका कहना है कि वे तथा उनकी वर्दी तैयार है जब भी देश आदेश देगा वे बिना वेतन देश सेवा को तैयार हैं। अदभ्य साहसी, निर्भीक एवं जुझारू मेजर ऊषा कुमावत पर कुमावत समाज को सदैव गर्व है।

साण्डेराव में विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजित

गोड़वाड़ कुमावत शिक्षा समिति द्वारा आयोजित 25वाँ प्रतिभावान विद्यार्थी सम्मान समारोह निम्बोरानाथ महादेव साण्डेराव सुमेरपुर पाली में आयोजित किया गया। यह आयोजन पिछले 25 वर्षों से श्री जोरारामजी कुमावत के संयोजकत्व में गोड़वाड़ कुमावत शिक्षा समिति द्वारा निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न हो रहा है। इस प्रतिभा सम्मान समारोह से प्रेरणा लेकर अनेक क्षेत्रों में ऐसे आयोजन होने लगे हैं। और इस आयोजन की सफलता यह है



कि शिक्षा के प्रति जागृति आयी है। बच्चे उच्च पदों पर जा रहे हैं। और अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे आयोजन समय समय पर आयोजित होते रहने चाहिये। इस भव्य आयोजन में पूज्य महाराजश्री ने पधारकर अपने कर कमलों से

होनहार प्रतिभाओं को सम्मानित कर मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। इस आयोजन में माननीय केबीनेट मंत्री श्री जोरारामजी कुमावत उपस्थित रहे।

वधु पक्ष ने वर पक्ष को तुलसी का पौधा किया भेंट

बेटी घर संवारे और तुलसी सवारे आंगन को पहल के तहत वधु पक्ष ने वर पक्ष को तुलसी का पौधा भेंट किया। नव दंपति जोड़े को पौधे की प्रतिदिन देखभाल करने की जिम्मेदारी दी गई। पांचोता निवासी नानू राम मारोठिया के सुपुत्र गोपाल कुमावत का विवाह कुचामन सिटी माधनिया भवन के पास चेना राम मारवाल की पुत्री नीतू के साथ भारतीय रीति रिवाज के साथ संपन्न हुई। शादी के दौरान वधु पक्ष ने तुलसी का पौधा भेंट किया। घर में तुलसी के पौधे को शुभ माना जाता है। तुलसी के पौधे से आस पास का वातावरण शुद्ध होता है। तुलसी का पौधा घर और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। इस पहल की राज्य मंत्री विजय सिंह चौधरी, खारिया सरपंच देवी लाल दादरवाल, भाजपा नेता ज्ञाना राम, शिव मन्दिर ट्रस्ट अध्यक्ष राजकुमार फौजी, देवली सरपंच रामनिवास नेहरा, पांचोता सरपंच मनु बन्ना, पांचोता के पूर्व सरपंच नेमीचंद जैन, सहित अन्य समाज के लोगो ने प्रशंसा की।



चित्तौड़गढ़ में सामुहिक विवाह सम्पन्न 11 जोड़े परिणयसूत्र में बंधे

अक्षय तृतीया के अबूझ सावे पर चित्तौड़गढ़ में पंचम आदर्श तुलसी एवं सामुहिक विवाह का आयोजन कुमावत विकास एवं सेवा संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इसमें 11 जोड़े विवाह बंधन में बंधे। सवरे धूमधाम से गाजे-बाजे के साथ गांधीनगर में कलश एवं बिंदोरी निकाली गयी फिर परिसर पहुंचने पर तोरण एवं वरमाला हुई। इसके बाद मंत्रोच्चार के साथपाणिग्रहण संस्कार किया गया। इन रस्मों के साक्षी बने 11 जोड़े के परिवारजन, रिश्तेदार एवं गणमान्य समाजजन। प्रत्येक दम्पति को संस्था की ओर से उपहार दिये गये। इस संस्थान ने 5 वर्षों में 135 जोड़ों का विवाह इन सम्मेलनों में कराकर प्रशंसनीय कार्य किया है। इससे अल्प आय वाले परिवार भी सामुहिक विवाह सम्मेलन में शादी करके आर्थिक बोझ से बच पाये हैं। इस अवसर पर नवनिर्मित श्री चारभुजा कुमावत समाज छात्रावास का लोकार्पण भी हुआ।

सूचना

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका समाज की प्रतिभावान महिलाओं, उच्च राजकीय पदों पर नियुक्त, प्रोफेशनल्स, प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं समान योग्यता वाली महिलाओं का परिचय प्रकाशित करना चाहती है कृपया वाट्सएप नं.9460870125 या ईमेल kumawatindiapatrika@gmail.com पर अपना विवरण मय फोटो प्रेषित करने का श्रम करें।

चाकसू कुमावत समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

श्री कुमावत क्षत्रिय समाज चाकसू का जानकी नवमी 5 मई को पंचम सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस समारोह में 8 जोड़ियां विवाह बंधन में बंधीं। यह आयोजन समाज के एकता, सहयोग और संस्कृति के संरक्षण का प्रतीक बनकर सामने आया। घोड़ी पर सवार दुल्हों की सामूहिक बारात प्रातः नीलकण्ठ मंदिर से बैडबाजे के साथ मुख्य मार्गों से होकर विवाह स्थल पहुंची। जहां समाज की ओर से आयोजित विवाह उत्सव में तोरण, वरमाला व फेरे सहित सभी वैदिक मंत्रोंच्चार के विवाह सम्पन्न कराया गया।

गणमान्य अतिथियों व समाजजनों ने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया और उनके सुखमय वैवाहिक जीवन की कामना की।

विवाह समिति एवं भामाशाहों की ओर से नवविवाहित जोड़ों को गृहस्थ जीवन की शुरुआत के लिए आशीर्वाद स्वरूप उपहार एवं उपयोगी सामान भेंट किया गया। इनमें हर जोड़े को वस्त्र पोशाक के साथ 21 बर्तन, LED टीवी, सिलाई मशीन, मंगलसूत्र, चांदी की

पायल, बिछिया, डबल बैड पलंग और आलमारी व फ्रिज- कूलर सहित अनेक उपयोगी सामान उपहार में शामिल था। इन उपहारों ने नव दंपतियों के चेहरों पर खुशी और संतोष की चमक भर दी।

सामूहिक विवाह का उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को सहयोग देना, सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना और शादी जैसे रस्म को सरल एवं सामूहिक रूप में सम्पन्न करना है।

समारोह में ये हुए शामिल : सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर बम्बोरिया, राष्ट्रीय महामंत्री रूप सिंह कारगवाल, पूर्व उप महापौर विमल कुमावत, कांग्रेस ओबीसी की प्रदेश महासचिव भारती वर्मा कुमावत, खेड़ा बालाजी विवाह समिति अध्यक्ष डॉ. जयनारायण जूनवाल, सहित अनेक गणमान्य लोगों ने शिरकत की और वर-वधुओं आशीर्वाद प्रदान किया। वहीं, विवाह सम्मेलन में शामिल वर-वधु पक्ष के परिजनों ने सामूहिक विवाह स्थल की व्यवस्थाओं की बहुत तारीफ की।

ऑपरेशन सिंदूर

22 अप्रैल 2025 को पहलगांव में हुआ आतंकी हमले में 26 लोगों हत्या हुई। इससे देशभर में रोष था। आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर एक महत्वपूर्ण सैन्य अभियान था जिसे भारतीय सशस्त्र बलों ने 6-7 मई 2025 की रात को चलाया था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर (PoJK) में आतंकवादी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाना था, जो भारत में सीमा पार आतंकवाद के लिए जिम्मेदार थे।

ऑपरेशन सिंदूर के मुख्य बिंदु निम्न थे:

उद्देश्य: ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य आतंकवादी समूहों की परिचालन क्षमताओं को बेअसर करना था जो भारतीय क्षेत्र में सीमा पार आतंकवाद के लिए जिम्मेदार थे।

लक्ष्य: अभियान में पाकिस्तान और PoJK में 9 स्थलों को निशाना बनाया गया, जिनमें लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे आतंकवादी समूहों के ठिकाने शामिल थे।

सैन्य कार्रवाई: भारतीय वायु सेना के लड़ाकू जेट ने स्टैंड-ऑफ हथियारों का उपयोग करके मिसाइलें दागीं, जिन्हें भारतीय क्षेत्र से लॉन्च किया गया था।

परिणाम: ऑपरेशन में 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए, जिनमें जैश-ए-मोहम्मद के नेता अब्दुल रऊफ अजहर भी

शामिल थे।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद की स्थिति:

पाकिस्तान की प्रतिक्रिया: पाकिस्तान ने भारतीय कार्रवाई को आक्रामकता का कार्य बताया। उसने नियन्त्रण रेखा के सीमावर्ती गांवों पर गोलाबारी की। उसने ड्रोन, मिसाइल व युद्धक विमानों से भारत पर हमला किया।

भारत की प्रतिक्रिया: भारत ने पाकिस्तान की कार्रवाई को जवाब देते हुए सीमा पर गोलीबारी की। पाक की मिसाइल, ड्रोन व एफ-16, जेएफ-17 विमान आदि हवा में ही नष्ट कर दिये। जवाब में भारत ने ब्रह्मोस मिसाइल दाग कर उसके 11 रन वे को भारी नुकसान पहुंचाया। अन्ततः पाकिस्तान ने घबरा कर सीजफायर की गुहार लगाई। जिसे भारत ने अपनी शर्तों पर मानकर आपरेशन सिन्दूर पर अस्थायी रोक लगाई है। अब आतंकी कार्रवाई को भारत एकट आफ वार मानेगा और जहां व जब चाहेगा उसके विरुद्ध कार्रवाई करेगा। पाक से बातचीत अब आतंकवाद व POK को खाली करने पर होगी तथा सिंधु जल संधि अब स्थगित रहेगी।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया: वैश्विक मीडिया ने ऑपरेशन सिंदूर को आतंकवाद के विरुद्ध भारत की एक निर्णायक और सटीक कार्रवाई के रूप में माना है। जो उसका अधिकार था।

एक रुपया नारियल लेकर की शादी

ओमप्रकाश कुमावत ने अपने पुत्र अमित कुमावत का विवाह 20 अप्रैल को कुचामन निवासी नीमचंद कुमावत की सुपुत्री ललिता कुमावत के साथ बिना दहेज और दिखावे के केवल एक रुपया नारियल और कलश में संपन्न कराया। यह विवाह समारोह समाज के लिए एक आदर्श बनकर उभरा है और लोगों को सादगी अपनाने की प्रेरणा देता है



रिमझिम कुमावत ने राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

जयपुर। कुमावत समाज की प्रतिभाशाली छात्रा रिमझिम कुमावत पुत्री स्वर्गीय श्री राजेन्द्र बैरा ने पी.एल. मीमरौट स्मृति राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर समाज का नाम रोशन किया है। उन्होंने 'भारतीय दलित समाज : बराबरी का संघर्ष और चुनौतियां' विषय पर अंग्रेजी भाषा में प्रभावशाली निबंध प्रस्तुत कर अपनी गहन सोच और लेखन क्षमता का परिचय दिया। उनके निबंध में यह संदेश स्पष्ट था कि शिक्षा ही सभी मूल अधिकारों की जननी है। उन्होंने बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रसिद्ध वाक्य 'शिक्षा शेरनी का वह दूध है, जो जितना पिएगा उतना दहाडेगा' को उद्धृत करते हुए शिक्षा के महत्व को



समाज सुधार से जोड़ा।

रिमझिम कुमावत की इस सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि समाज की बेटियां भी अब शिक्षा, सोच और लेखन के माध्यम से सामाजिक बदलाव की दिशा में अहम भूमिका निभा रही हैं। कुमावत समाज में शिक्षा की

दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है और समाज के युवा जागरूकता, तर्कसंगत विचार और सामाजिक बदलाव की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

एक भव्य कार्यक्रम के दौरान पी.यू.सी.एल. की राष्ट्रीय अध्यक्ष कविता श्रीवास्तव द्वारा रिमझिम कुमावत को 1500 रुपए का चैक तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

रूप सिंह कुमावत के संयोजन में इण्डो-नेपालकॉन सम्पन्न

काठमांडू (नेपाल) में हाल ही इंडो-नेपाल अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस (इंडो नेपालकॉन) 2025 का आयोजन हुआ। मुख्य संयोजक रूप सिंह कुमावत ने बताया कि कॉन्फ्रेंस में चिकित्सा क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान का आदान-प्रदान किया गया। आपदा प्रबंधन और सामुदायिक स्वास्थ्य जैसे विषयों पर संवाद और प्रशिक्षण सत्र भी हुए। डॉ. राजेश शर्मा ने कार्डियक अरेस्ट के दौरान ऑटोमैटेड एक्सटर्नल डिफाइब्रिलेटर की उपयोगिता पर जोर दिया। डॉ. लोकेन्द्र शर्मा ने एंटीबायोटिक के विवेकपूर्ण उपयोग एवं



एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस के खतरों पर विस्तार से प्रकाश डाला। एसएमएस मेडिकल कॉलेज, ट्रॉमा सेंटर के बिजेंद्र और राधे लाल शर्मा ने बेसिक लाइफ सपोर्ट के बारे में प्रशिक्षण दिया।

डॉ. जे. पी. अग्रवाल ने लाइफस्टाइल मेडिसिन की आधुनिक चुनौतियों पर व्याख्यान दिया। डॉ. ओ. पी. शर्मा ने राजस्थान की सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी साझा की। वहीं, डॉ. मेधेंद्र शर्मा ने प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान की वर्तमान प्रासंगिकता पर विचार रखे।

संत श्री गरवाजी का मेला 20 जून को

संत श्री गरवाजी महाराज का जन्म भिडकमल भाटी परिवार में हुआ, युवावस्था में वैराग्य उत्पन्न होने के बाद उन्होंने गृह त्याग कर संत बने और समाज में व्याप्त कुरीतियों का खंडन करते हुए पुनर्विवाह अपनाने के लिए अपने अपने शिष्यों को प्रेरित किया, उन्होंने कुमावत समाज की स्थापना की और लौद्रवा, जैसलमेर में जीवित समाधि ली। उनकी स्मृति में हर वर्ष की भांति इस बार भी 20 जून को मेले व सामाजिक सम्मेलन का आयोजन होगा।

गांव लौद्रवों जैसलमेर में स्थित कुमावत समाज के संस्थापक संत श्री गरवाजी महाराज के मन्दिर में अखिल भारतीय कुमावत संत श्री गरवाजी सेवा समिति के अध्यक्ष राजूराम बग की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में समाज के प्रबुधजनों, समाजसेवियों तथा समिति के पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में सेवा समिति द्वारा किए गए कार्य के कामकाज की जानकारी, वर्ष 2024-25 के। आय ×व्यय की जानकारी एवं भामाशाहों द्वारा की गयी। घोषणाओ, मन्दिर विकास एवं निर्माण व विकास, समाज संस्थापक संत श्री गरवाजी की पुण्यतिथि पर आगामी वार्षिक मेला एवं सामाजिक सम्मेलन 20 जून 2025 को सम्पन्न कराने हेतु रूपरेखा तय की गई। मेले के आयोजन के लिए नीम्बाराम बोरवाट को मेला संयोजक बनाया गया।

बाबूलाल मारोटिया को वरिष्ठ नागरिक राष्ट्रीय पुरस्कार



जयपुर के प्रसिद्ध चित्रकार एवं शिल्पगुरु बाबूलाल मारोटिया को भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए वरिष्ठ नागरिक राष्ट्रीय पुरस्कार-2022 के लिए चयनित किया। लम्बे समय से मारोटिया के द्वारा भारतीय कला व संस्कृति को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठा व सम्मान दिलाए जाने के लिए उन्हें महामहिम राष्ट्रपति द्वारा 2 मई को राष्ट्रपति भवन में बुलाकर सम्मानित किया।

मातृत्व दिवस पर एक विशेष पहल

ह्यूमन ग्लोरी फाउंडेशन ट्रस्ट (रजि) एवं लोटस इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट (लिफ्ट) के संयुक्त तत्वाधान में मातृत्व और करुणा को समर्पित एक परिंडा मां के नाम व भारत पाक युद्ध की स्थिति को देखते हुए राजस्थान सरकार के निर्देशानुसार ब्लड बैंकों में रक्त व दवाइयां की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु विशाल रक्तदान शिविर व निशुल्क मैडिकल कैंप का आयोजन होटल कल्याण बैंक्रीट और गार्डन मानसरोवर में रखा गया। लोटस इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट (लिफ्ट) के संस्थापक अध्यक्ष श्री संजीव वर्मा ने रक्तवीरों और अतिथियों का स्वागत और सम्मान किया

मानव जीवन में परमानन्द कैसे लाए

मानव जीवन को उसके चेतना के स्तर (Level of Consciousness) को आधार मानकर निरूपित करने का प्रयास इस आलेख में किया गया है।

इस आलेख को समझकर हम जीवन को सही दिशा में मोड़कर आज तक हमारे से हो रही गलती को सुधार कर परमानन्द (Ecstasy) को इसी जीवन में महसूस कर सकते हैं।

हमारे जीवन को चलाने में हमारे मस्तिष्क हर पल चल रहे भाव (Emotions), आंतरिक संवाद (Inner Dialogue) का ही सबसे अहम भूमिका होती है। हम चाहे भौतिक रूप से कितने ही संपन्न हो, सामाजिक एवम् राजनैतिक रूप से कितने ही बड़े उच्च पद पर हो, किसी भी देश-विदेश में निवास कर रहे हो, हमारा जीवन नारकीय श्रेणी का दुःखी जीवन हो सकता है या स्वर्ग श्रेणी का परमानन्द का जीवन हो सकता है। इसको बनाने में हमारे भाव एवम् हमारे अंदर चल रहे आंतरिक संवाद का ही एकमात्र योगदान होता है। अतः इन्हें चार स्टेज में बाँटा गया है।

प्रथम दो स्टेज में हम दुनिया को चलाने वाले किसी सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते हैं तथा यह मानते हैं कि हमारा जीवन किसी परिस्थिति अथवा हमारे स्वयं के कारण से ही चल रहा है।

1. जीवन को उत्पीड़न (State of Victimhood) का जीवन समझना जिसमें हमारे जीवन के लिए बाहर की परिस्थितियों, दूसरे लोगों, घटनाओं को जिम्मेदार मानते हैं। हमेशा स्वयं को उत्पीड़क (Victimised) समझते हैं। इस जीवन में अधिकतम प्रसन्नता की दर 22% के लगभग होती है अधिकतम चेतना का स्तर 199 होता है। आश्चर्य की बात है कि दुनिया की आबादी का 85% भाग इसी श्रेणी के अंतर्गत आता है। यह माना जाता है कि जब दुनिया की समस्त आबादी इस श्रेणी में आ जाएगी तो पृथ्वी पर प्रलय हो जायेगा। अतः हर मानव का परम कर्तव्य है कि जीवन के हरपल चेतना के इस श्रेणी से ऊँचा उठने का प्रयास करना चाहिए।

2. जीवन के समस्त कार्यों के लिए स्वयं को जिम्मेदार

मानना (I make life happen)। इस श्रेणी में भी सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हुए इस जीवन के समस्त कार्यों के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते हैं। उक्त भाव/आंतरिक संवाद हमारे जेहन में होते हैं तो हमारे चेतना का स्तर 200 से 499 के बीच होते हैं। इस दौरान हमारे जेहन में Courage, Trust, Willingness, Neutrality, Acceptance and Reason / Logic के भाव चलते रहते हैं। दुनिया की 14.5% आबादी इसी श्रेणी में आती है। इस श्रेणी में प्रसन्नता की दर 55% से 80% के बीच होती है।

3. आत्मा/सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार करना परन्तु जीव एवम् आत्मा को अलग अलग मानने वाले मानव इस श्रेणी में आते हैं। इस श्रेणी में चेतना का स्तर 500 से लेकर 599 तक होता है। प्राचीन भारत में 7 वर्ष बच्चे को शिक्षा देने की शुरुआत इसी श्रेणी के ज्ञान से की जाती थी। उपनयन संस्कार में सिखाये जाने वाले गायत्री मंत्र में सर्वप्रथम सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार करने की ही शिक्षा दी जाती है। इस श्रेणी के भाव जब जेहन होते हैं तो हम मानते हैं जीवन के समस्त कार्य हमारे द्वारा ईश्वर ही करता है। जब हमारे जेहन में श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, करुणा, कृतज्ञता, ईश्वर को समर्पित (Surrender to God) के भाव आते हैं तो समझ लो हम इस श्रेणी का आनन्द ले रहे हैं। दुनिया की 0.04% आबादी वर्तमान में इस श्रेणी में आ रही है।

4. यह चेतना के उच्चतम स्तर की श्रेणी है। इसमें मानव शरीर अद्वैवाद के सिद्धांत को हृदयंगम कर लेता है। हमारा शरीर मानने लग जाता है कि हमारे समस्त कार्य सृष्टिकर्ता ही कर रहा है, हम तो निमित्तमात्र हैं, जैसा गीता में वर्णित है। इस श्रेणी में चेतना का स्तर 600-1000 के बीच होता है। भगवान बुद्ध, कृष्ण, महावीर ने अपने जीवन में इस श्रेणी के चेतना के उच्चतम स्तर 1000 को प्राप्त किया था।

मेरी यह व्यक्तिगत राय है कि आज के आलेख को ध्यानपूर्वक हृदयंगम करें एवम् जीवन को चेतना के उच्चतम स्तर पर ले जाने का प्रयास करावे।

- एस आर सिंघाटिया

संयुक्त परिवार-एक संपूर्ण पाठशाला

संयुक्त परिवार केवल एक छत के नीचे कई लोगों का साथ रहना नहीं होता, यह जीवन जीने की एक संपूर्ण पाठशाला होती है। इसमें हर उम्र के सदस्य होते हैं: दादा-दादी से लेकर बच्चों तक और इसमें हर किसी की भूमिका अनमोल होती है। एक संयुक्त परिवार में बच्चे सिर्फ किताबों से नहीं, अनुभवों से सीखते हैं- बड़ों का आदर करना, छोटों से प्रेम करना, संघर्ष में साथ देना और खुशी में एकजुट रहना इन्हीं रिश्तों के बीच रहकर

सीखते हैं।

संयुक्त परिवार में हर दिन कोई नई सीख होती है: कभी धैर्य की, कभी त्याग की, तो कभी साझेदारी की। यह एक ऐसी 'यूनिवर्सिटी' है जहाँ न कोई परीक्षा होती है और न कोई डिग्री, लेकिन जो ज्ञान यहाँ मिलता है, वह जीवन भर साथ रहता है। संस्कार, अनुशासन और सह-अस्तित्व की शिक्षा एक संयुक्त परिवार ही सच्चे रूप में दे सकता है।

अरेंज मैरिज : अभिभावकों की महती भूमिका



भारतीय समाज में विवाह को एक पवित्र बंधन और जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय माना गया है। यह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं होता, बल्कि दो परिवारों का, दो संस्कृतियों का और दो जीवन दृष्टिकोणों का समागम होता है। भारत में सदियों से व्यवस्थित विवाह या अरेंज मैरिज

की परंपरा रही है, जिसमें माता-पिता अथवा परिवारजन अपने बच्चों के लिए उपयुक्त जीवनसाथी का चयन करते हैं। अरेंज मैरिज को हिंदी में सुसंगत विवाह, व्यवस्थित विवाह अथवा परिवार की पसन्द और सहमति से किया जाने वाला विवाह भी कहा जाता है। व्यवस्थित विवाह भारतीय संस्कृति की एक मजबूत नींव है, जिसने सदियों से पारिवारिक व्यवस्था को बनाए रखा है।

आज जबकि प्रेम विवाह (लव मैरिज) का चलन भी बढ़ रहा है, तब भी अरेंज मैरिज की प्रासंगिकता बरकरार है।

व्यवस्थित विवाह वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें माता-पिता या अभिभावक अपने बच्चों के लिए योग्य वर या वधु का चयन करते हैं। इसमें सामाजिक, धार्मिक, जातिगत, आर्थिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए विवाह तय किया जाता है। आमतौर पर दोनों परिवार एक-दूसरे के गुण, संस्कार, प्रतिष्ठा, रहन-सहन और विचारधारा का अध्ययन करते हैं, फिर वर-वधु को आपस में मिलाने का अवसर दिया जाता है। यदि सब कुछ अनुकूल हो, तो विवाह तय होता है। हम इस पुरानी सामाजिक परम्परा की तरफ देखें तो इसके कुछ लाभ भी नजर आते हैं-

1. पारिवारिक सहमति और समर्थन : इस प्रकार के विवाह में दोनों परिवारों की सक्रिय भागीदारी होती है, जिससे विवाह के बाद का जीवन अधिक सहज और स्थिर होता है। जब कोई समस्या आती है, तो दोनों परिवार मिलकर उसका समाधान करते हैं।

2. सामाजिक सामंजस्य और सम्मान : व्यवस्थित विवाह समाज द्वारा अधिक सहजता से स्वीकार किए जाते हैं। इससे नवविवाहित दंपति को सामाजिक स्तर पर भी सम्मान मिलता है।

3. अनुभव का लाभ : माता-पिता अपने जीवन के अनुभव और समझ के आधार पर सही निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। वे भावनाओं के बजाय तर्क और दीर्घकालिक सोच के आधार पर निर्णय लेते हैं।

4. सांस्कृतिक एकरूपता : अधिकांश व्यवस्थित विवाह समान संस्कृति, भाषा और परंपराओं वाले परिवारों में होते हैं, जिससे विवाह के बाद अनुकूलन में आसानी होती है।

अब प्रश्न उठता है कि जब बेटे के लिए वधू तलाशना प्रारंभ करें अथवा बेटे के लिए वर तो किस किस बात का ध्यान रखा जाये-बेटे के लिए वधू तलाशते समय ध्यान देने योग्य मुख्य बातें:

1. लड़की की सहमति और स्वभाव : सबसे पहले यह देखें

कि लड़की इस रिश्ते के लिए स्वेच्छा से तैयार है या नहीं। उसका स्वभाव सौम्य, समझदार और व्यवहारिक है या नहीं।

बातचीत करने का तरीका, आत्म-विश्वास और परिवार के प्रति दृष्टिकोण जानना जरूरी है।

2. शिक्षा और बुद्धिमत्ता : लड़की की शिक्षा, सोचने का तरीका और जीवन के प्रति दृष्टिकोण। क्या वह आपके बेटे के साथ मानसिक और बौद्धिक स्तर पर सामंजस्य बैठा सकती है? नौकरीपेशा है या नहीं — यह आपकी पारिवारिक सोच और आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।

3. परिवार और संस्कार : लड़की के परिवार की पृष्ठभूमि, संस्कार, जीवनशैली और सामाजिक व्यवहार पर भी विचार किया जाना चाहिए। कहते हैं लड़की के व्यक्तित्व पर उसकी मां का बहुत प्रभाव होता है अतः बेटे के साथ साथ उसके परिवार की आपसी समझ, इज्जत और संस्कार पर भी गौर किया जाना चाहिए।

4. स्वास्थ्य और व्यक्तित्व : लड़की का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए। अत्यधिक दिखावे या बनावटी व्यक्तित्व से बचें — सरलता और आत्मसम्मान अधिक जरूरी है।

5. आपसी अनुकूलता (Compatibility) : आपके बेटे और लड़की की सोच, आदतें, रुचियाँ और जीवन के प्रति दृष्टिकोण एक-दूसरे के पूरक हों। शादी से पहले दोनों को मिलने और बात करने का अवसर जरूर दें, ताकि वे एक-दूसरे को समझ सकें।

6. जीवन के लक्ष्य और उम्मीदें : लड़की का अपने करियर, परिवार और जीवन को लेकर क्या दृष्टिकोण है — उसे जरूर जानें। क्या वह संयुक्त परिवार, नौकरी, बच्चों आदि के बारे में संतुलित सोच रखती है?

7. निष्कर्ष : बहू तलाशते समय केवल बाहरी सुंदरता, शिक्षा या आर्थिक स्थिति न देखें। यह रिश्ता जीवनभर के लिए होता है, इसलिए मानसिक मेल, पारिवारिक संस्कार, और आपसी समझ को सबसे अधिक महत्व दें। साथ ही यह भी सुनिश्चित करें कि आपका बेटा भी इस निर्णय में पूरी तरह शामिल और संतुष्ट हो।

बेटे के लिए वर तलाशते समय ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बातें :

1. लड़के का स्वभाव और व्यवहार : उसका स्वभाव कैसा है — शालीन, विनम्र, जिम्मेदार या क्रोधी, अहंकारी? क्या वह दूसरों की इज्जत करता है, खासकर महिलाओं की? उसकी बातचीत की शैली से बहुत कुछ पता चलता है — ध्यान दें।

2. शिक्षा और समझदारी : लड़का शिक्षित हो, लेकिन उससे भी जरूरी है कि वह व्यावहारिक और समझदार हो। जीवन और रिश्तों के प्रति उसका दृष्टिकोण परिपक्व होना चाहिए।

3. रोजगार और आर्थिक स्थिति : लड़का क्या करता है? उसकी नौकरी या व्यवसाय स्थिर और भरोसेमंद है या नहीं? क्या वह

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है? केवल कमाई न देखें, बल्कि भविष्य की स्थिरता और सोच भी देखें।

4. परिवार और पारिवारिक वातावरण : लड़के का परिवार कैसा है — संस्कारी, शिक्षित, और बेटी को सम्मान देने वाला? घर का माहौल सहयोगी है या महिला-विरोधी, रुढ़िवादी या दबाव डालने वाला।

5. बेटी की सहमति और इच्छा : सबसे ज़रूरी है कि आपकी बेटी इस रिश्ते से खुश और तैयार हो। बेटी को लड़के से मिलने, बात करने और अपना निर्णय लेने का अवसर ज़रूर दें। बिना बेटी की सहमति के रिश्ता बिल्कुल न तय करें।

6. जीवनशैली और सोच में मेल (Compatibility) : दोनों की सोच, शिक्षा स्तर, रुचियाँ, और जीवनशैली में मेल ज़रूरी है। यदि एक आधुनिक है और दूसरा अत्यधिक परंपरागत, तो आगे चलकर टकराव हो सकता है।

7. लड़के की आदतें और चरित्र : क्या लड़का नशा करता है (शराब, सिगरेट, आदि)? उसका चरित्र, ईमानदारी, और पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति दृष्टिकोण क्या है? क्या वह अपने माता-पिता, बहन या पत्नी के प्रति संवेदनशील है?

8. भविष्य की योजनाएँ और दृष्टिकोण : शादी के बाद वह बेटी के काम, शिक्षा, या करियर को लेकर क्या सोचता है? क्या वह बेटी को स्वतंत्रता और निर्णय लेने की आज़ादी देगा?

9. दहेज जैसी कुरीतियों से दूरी : अगर लड़का या उसके परिवार में दहेज की लालसा हो, तो वह रिश्ता तुरंत नकार दें। बेटी को सम्मान मिले, सामान नहीं — यह आपकी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

10. निष्कर्ष : बेटी के लिए वर (दूल्हा) तलाशना एक बहुत ही जिम्मेदार, संवेदनशील और भावनात्मक निर्णय होता है। यह केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि बेटी के पूरे भविष्य से जुड़ा होता है। इसलिए बहुत सोच-समझकर और संतुलित दृष्टिकोण से निर्णय लेना चाहिए।

अतः यदि आप ने अपनी संतान के लिए अरेंज मैरिज का निर्णय लिया है तो एक अभिभावक के रूप में आपकी जिम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है। आशा है उपरोक्त बिंदु आपकी कुछ सहायता कर सकते हैं। विषय से संबंधित अपने विचारों को whatsapp no. 9408093778 पर साझा करें। हो सकता है आपके विचार कुमावत समाज को अच्छा मार्गदर्शन प्रदान कर सकें।

- डॉ प्रिया मारवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर

ढूँढिये वजह मुस्कुराने की-6

रहूँ उदास तो किसी को परवाह नहीं...

मुस्कुराता हूँ तो लोग वजह पूछ लेते हैं।

मुस्कुराना स्वास्थ्यप्रद और सकारात्मक गुण है। यह शरीर और मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। आत्मविश्वास इसे सहज बनाता है। इसलिए जब भी आप खुश हो तो मुस्कुराइये। जीवन में खुश होने का कोई भी अवसर ज़रूर ढूँढिये। आप चुटकुले सुनें या हास्य-विनोद के वीडियो देखें पर मुस्कुराईये। मुस्कुराना खुशनुमा जीवन का हिस्सा है और यह नेचुरल पेनकिलर है।

मुस्कुराने की वजह ढूँढिये अन्यथा जिन्दगी यूँ ही कट जायेगी। कभी-कभार बेवजह मुस्कुरा के देखो, जिन्दगी संवर जायेगी। मुस्कुराये से मूड होता है अच्छा, तनाव से होगी आजादी, इम्यूनिटी होगी बूस्टर, प्रोडक्टिविटी बढ़ेगी, हार्ट बीट और ब्लड प्रेशर होगा नियंत्रित और सामने वाला होगा हेप्पी। हमने देखा है एक डॉक्टर और नर्स मरीज से सदैव मुस्कुरा कर बात करते हैं और इससे आई पोजिटिविटी और आत्मविश्वास बीमार को जल्द स्वस्थ होने में सहायक होता है। मुस्कुराकर बातचीत करना औषधि के समान है, मुस्कुराना अनमोल चीज है।

अपने रिश्तों में आई कड़वाहट को मिटाने, गाने-गुनगुनाने, प्रेम और भक्ति से भी हम अपने जीवन में प्रसन्नता ला सकते हैं। इसलिए जरा मुस्कुराइये, थोड़ा गुनगुनाइये, दिलों की दूरियाँ मिटाते जाईये। जरा कदम तो बढ़ाईये थोड़ा मुस्कुराईये। मुस्कान में छिपी है खुशियों की सारी अदाएं, जरा दिल में शमा जलाईये। आईये, दिलों की दूरियाँ मिटाइये। ईश्वर के भरोसे हम जीएँ जाएँ, एक दिन प्रेम व

भक्ति ज़रूर रंग लायेगी। उम्र जितनी भी बची हो, मुस्कान से इसे सजाते जाईये एवं दिलों की दूरियाँ मिटाते जाईये। डरिये मत कि लोग क्या कहेंगे? क्योंकि जीते हैं गम लिए सारे लोग। खुशियों को सभी में बाँटिये, अंधेरे में शमा जलाइये एवं रोशनी से राह जगमगाइये।

सच मानिये, मुस्कुरात ने दिलों में जलायी है ज्योतियाँ और नफरत की आँधियों से बचाये हैं आशियाँ, हम किसी की दुःख-दर्द में मदद तो करें उसके चेहरे पर मुस्कान आयेगी। यकीन मानिए वह ताजिन्दगी इसे याद रखेगा। इससे आपके हृदय की अनन्त गहराईयों से खुशी मिलेगी। जीवन का सफर लबा है इसमें कटुता, वैमनस्य, नफरत, ईर्ष्या जैसी बुराईयाँ निकट भी न आने दें। अपने होठों पर मुस्कान लाईये, यकीनन जिन्दगी आसान, छोटी तथा सरल हो जायेगी। बिना मुस्कान के तो पति-पत्नी का रिश्ता भी अलग ही रूप ले लेता है। इसलिए रिश्तों में मुस्कुराहट का मिठास घोलिये और दाम्पत्व जीवन को सहज और प्रेममय बनाकर स्वयं के साथ परिवार को भी सुखमय बनायें।

सूरजत की किरणों में मुस्कुराहट ढूँढो,

हवा की रफ्तार में खुशबू ढूँढो।

एक मुस्कुराता चेहरा सुन्दरता को बढ़ा देता है। यह सभी की चाहत होती है। इसलिए फोटोग्राफर भी कहता है **स्माइल प्लीज**। इससे फोटो अच्छी आती है, जिससे आत्मविश्वास झलकता है। मुस्कान एक माध्यम है एक-दूसरे से जुड़ने का, साथ ही संकेत है सलामती का। अतः दूसरों के मुस्कुराने की वजह हम बनें। तो फिर मुस्कुराईये ना।

-अमिता कुमावत

गर्मी के मौसम में आहारचर्या



गर्मी के मौसम में संतुलित आहार लेना महत्वपूर्ण है। क्योंकि उच्च तापमान हमारे शरीर पर अतिरिक्त दबाव डालता है। इस मौसम में, हमारा ध्यान शरीर को ठंडा रखने, हाइड्रेटेड रहने और आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थों पर होना चाहिए। गर्मी के मौसम

के लिए संतुलित आहार में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

पानी की मात्रा बढ़ाएँ: गर्मी में पसीना अधिक आता है, जिससे डिहाइड्रेशन का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, दिनभर में खूब पानी पिएं। इसके अलावा, तरबूज, खीरा, टमाटर और पत्तेदार सब्जियां जैसे पानी से भरपूर फल और सब्जियां खाएं।

हल्के और आसानी से पचने वाले भोजन: भारी और मसालेदार भोजन पचाने में मुश्किल होते हैं और शरीर में गर्मी पैदा कर सकते हैं। इसलिए, हल्का भोजन जैसे दाल, चावल, खिचड़ी, दही और छाछ को प्राथमिकता दें।

ताजे फल और सब्जियां: गर्मी के मौसम में कई ताजे फल और सब्जियां उपलब्ध होती हैं जो विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती हैं। आम, खरबूजा, तरबूज, खीरा, ककड़ी, नींबू और हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे मौसमी फल और सब्जियां अपने आहार में शामिल करें।

प्रोटीन का सेवन सीमित करें: प्रोटीन को पचाने में अधिक ऊर्जा लगती है, जिससे शरीर में गर्मी बढ़ सकती है। इसलिए, मांस और अन्य भारी प्रोटीन स्रोतों का सेवन सीमित करें। दालें, फलियां और दही प्रोटीन के बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

स्वस्थ वसा: स्वस्थ वसा जैसे कि नट्स और बीज उचित मात्रा में सेवन किया जा सकता है लेकिन तले हुए और तैलीय भोजन से बचें।

इलेक्ट्रोलाइट्स का संतुलन: पसीने के माध्यम से शरीर से इलेक्ट्रोलाइट्स (जैसे सोडियम और पोटेशियम) निकल जाते हैं। इनकी पूर्ति के लिए नींबू पानी, नारियल पानी या ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन) का सेवन किया जा सकता है।

मसालेदार और तैलीय भोजन से बचें: ये खाद्य पदार्थ शरीर में गर्मी बढ़ाते हैं और पाचन संबंधी समस्याएं पैदा कर सकते हैं।

कैफीन और शराब से बचें: ये मूत्रवर्धक होते हैं और शरीर को डिहाइड्रेट कर सकते हैं।

गर्मी के मौसम में कुछ अच्छे खाद्य और पेय विकल्प:

पेय: पानी, नींबू पानी, नारियल पानी, छाछ, लस्सी, फलों का रस (बिना चीनी मिलाए), हर्बल चाय (जैसे पुदीना या अदरक)।

फल: तरबूज, खरबूजा, आम, अंगूर, संतरा, खीरा, ककड़ी, टमाटर।

सब्जियां: हरी पत्तेदार सब्जियां (पालक, मेथी), लौकी, तोरई, भिंडी।

अनाज: हल्का पका हुआ चावल, दलिया, सूजी।

अन्य: दही, दालें, खिचड़ी।

गर्मी के मौसम में अपने शरीर को हाइड्रेटेड और ठंडा रखना महत्वपूर्ण है। सही भोजन और पर्याप्त तरल पदार्थ का सेवन करके आप इस मौसम में स्वस्थ और ऊर्जावान बने रह सकते हैं।

- डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन

ग्रीष्म ऋतु

गर्मी में मुख्यतः पीलिया, उल्टी, दस्त (अतिसार), लू का लगना, हैजा, आंखों के रोग होते हैं। हमें कुछ सावधानी रखनी चाहिये जिससे इससे बचा जा सके:-

1. सूती वस्त्रों का प्रयोग हितकर है।
2. शीतल पेय का प्रयोग करें, सीधी धूप से अपने सिर का बचाव करें।
3. बासी खाना नहीं खाएं।
4. मिठाई और मावे से बनी हुई वस्तुओं का प्रयोग कम करें।
5. पानी, दही, छाछ, शर्बत का सेवन करें।
6. वातावरण को संक्रमण मुक्त रखें। मक्खी, मच्छर से रहित रखें।
7. सुबह रोगी को स्वच्छ हवा में घूमने दें।

विशेषकर पेट सम्बंधी रोग इस मौसम में होता है। पीलिया रोगी को बिना घी-तेल का आहार दें। गन्ने का रस, मौसमी का रस, सूखे चने, उबली हुई सब्जी हितकर है।

उल्टी से बचाव : पुदीने का रस 4 चम्मच सुबह-शाम दें। अमृतधारा का प्रयोग करें।

दस्त से बचाव : कर्पूर धारा, कर्पूर रस-2 गो, केले का रस

दें। नमक, चीनी का पोल, नींबू का रस दें।

लू से बचाव : सिर को कपड़े से ढकें, घर से भूखे न निकले। लू लगने पर तलवे को मालिश प्याज के रस, घी से करें। ठंडा दूध पीने को दें।

आंखों के रोग : गुलाबजल का प्रयोग करें।

रोगों से बचाव : गर्मी में रोगों से बचने के लिए तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए। अधिक शीत से अधिक गर्मी में एकदम नहीं जाएं। अधिक गर्मी से अधिक शीतल वाले वातावरण में एकदम न जाएं। गर्मी से आते ही शीतल पेय न लें। अगर आप इन बातों का ध्यान नहीं रख पाए तो जुकाम लग जाएगा। अगर उपरोक्त कारणों से जुकाम हो जाए तो जीरा, धनिया ठंडे जल में मिलाकर पीने से लाभ होता है। 25 ग्राम गुलकंद खाने या पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है। इलायची और मुनक्का घोटकर चाटने से लाभ होता है। यदि नाक से ज्यादा पानी आ रहा हो तो इलामची, मुनक्का और अदरक घोटकर चाटे।

- संकलन : पत्रिका टीम

बेल का जूस पीयें गर्मी भगायें

गर्मी के मौसम में लू (Heat stroke) से बचाव के लिए ठण्डी चीजों का सेवन शरीर के लिए लाभदायक होता है। गर्मी का असर शरीर के बाहरी आवरण पर ही नहीं होता बल्कि भीतरी भागों पर भी होता है। हमें अपने शरीर को प्राकृतिक तरीके से ठण्डा रखना चाहिए। इसके लिए बेल का ज्यूस का सेवन अमृत समान माना गया है। इसकी तासीर ठण्डी होती है और इसका सेवन करने पर यह हमें लू लगने से बचाता है।

इसके लिए बाजार से ताजा बेल का फल लायें, फिर इसे पत्थर आदि से तोड़कर इसका पल्प निकाल लें और पल्लप में 1-2 गिलास पानी डालकर भिगों दें और इसके बीज निकाल लें। थोड़े समय बाद पल्प को मेश कर लें और छान लें। फिर चीनी, शहद डालें। थोड़ा भुना जीरा और काला नमक भी टेस्ट के लिए डाल

सकते हैं। फिर इन सभी को ठीक से मिक्स कर बर्फ डालकर पी सकते हैं।

इसी पीने से शरीर में पानी की कमी दूर होती है। यह पेट के लिए लाभदायक है तथा अल्सर और कब्ज से छुटकारा दिलाता है। इसके सेवन से जहां शरीर के अन्दर से प्राकृतिक ठण्डक मिलती है वहीं लीवर और खून का प्यूरिफिकेशन होता है। इससे ब्लड प्रेशर एवं कॉलेस्ट्रॉल नियंत्रित होता है, इम्यूनिटी को बढ़ाता है पर बील जूस का अति सेवन नहीं करना चाहिए। यह त्वचा एवं बालों के लिए भी लाभदायक है।

बील की पत्तियां भगवान शिव को पूजा के काम में आती हैं। वहीं इसकी पत्तियां मधुमेह के नियंत्रण में कारगर हैं। इसके चूण से अनेक औषधियां बनाई जाती हैं। - संकलन : पत्रिका टीम

कपालभाती प्राणायाम के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव

कपालभाती प्राणायाम 100 से ज्यादा रोगों पर विजयी दिलाता है। शरीर में पनप रहे रोगों को दूर भगाता है व शरीर को मेडिकल स्टोर होने से बचाता है। यह हमें रोगमुक्त व दवाई मुक्त जीवन को जीना सिखाता है।

कपालभारती के सम्बन्ध में निम्न सुझाव है:

1. जहां बैठकर प्राणायाम करे वो जगह साफ़ हो, हरेभरे पेड़-पौधें हो जहां भरपूर ऑक्सीजन उपलब्ध हो।

2. बैठने का आसन मोटा हो ताकि अपनी ऊर्जा नीचे ज़मीन में नहीं जाए।

3. आप अपने आसन पर बैठ जाए। सुखासन, पद्मासन, वज्रासन व जिस भी आसन में बैठे, पीठ व गर्दन सीधी, आँखें बन्द, चेहरे पर मुस्कराहट के भाव लाये। हाथों की अंगुलियों से ज्ञान मुद्रा, वायु मुद्रा बनाकर बैठे। 4. प्राणायाम को शुरुआत में केवल दो मिनट करें। बाद में धीरे-धीरे अभ्यास करके इसे बढ़ाते रहे।

कपाल यानी सिर ब्रेन में ब्लड का सर्कुलेशन अच्छा रहे यह सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाता है, यह चेहरे की चमक को बढ़ाता है। कपालभाती को लो गति, माध्यम गति व तेज गति से कर सकते हैं। मेरु दण्ड सीधा रहने से फेफड़ों में श्वासों का आदान-प्रदान अच्छा रहता है। अपना अभ्यास अनुभव के द्वारा करे। कपालभारती चमत्कार से कम नहीं।

पेट अन्दर श्वास बाहर हर सेकंड एक स्टॉक के साथ मन में ओम का उच्चारण करते हुए इसे करे। यह पेट का एक्यूप्रेशर, पाचन तंत्र को मजबूत तथा पेनक्रियाज को सक्रिय करता है। यह डायबिटीज़ को दूर करने में सहायक भी होता है। यह हीमोग्लोबिन

को बढ़ाता है, केलिशियम की कमी को दूर करता है, फेटी लीवर होने से बचाता है, पुरुषों में प्रोस्टेट नहीं होगा, महिलाओं में हार्मोन्स अनबलेंस नहीं होगा। शरीर का पावर स्टेशन पेट है पावर स्टेशन मजबूत होना ज़रूरी है। शरीर में ऊर्जा का संचार हो तो कमजोरी दूर होगी। अपने पेट को सशक्त रखने के लिए कपालभाती प्राणायाम करना चाहिए। यह कब्ज, गैस, मोटापा खत्म कर देता है। किडनी, लीवर, हार्ट की सर्विस कर देता है। शरीर की गाँठे व कैंसर तक के रोगों को भगा देता है।

सावधानी

1. कपालभाती किसी को देखकर ज्यादा नहीं करना चाहिए, जितना सामर्थ्य हो उतना ही करे, नहीं तो पेट में भारीपन व दर्द हो सकता है।

2. प्रेगनेंसी में इसे नहीं करे। पेट का ऑपरेशन हो रखा हो तो नहीं करे। हर्निया का ऑपरेशन हो रखा तो नहीं करे।

3. उच्च रक्तचाप हो तो तेज गति से नहीं करे। शरीर में पित्त यानी गर्मी बढ़ी हुई है तो तेज गति से नहीं करे।

4. कपालभारती को भोजन के चार घंटे के बाद करना चाहिए। इसे पानी पीने के आधे घंटे बाद करे।

5. यदि नीचे नहीं बैठ सके तो कुर्सी पर बैठकर करें।

यकीन मानिये कपालभारती करने से अनेक रोगी ठीक हो गये, उनकी दवाईयां बंद हो गयी तथा अनेक लोग अब चुस्त-दुरस्त महसूस कर रहे हैं। इसलिए करो योग भगाओ रोग।

- प्रभुदयाल तूनगरिया, मुख्य योग प्रशिक्षक, पतंजलि योग समिति, किशनगढ़ तहसील प्रभारी, मो.9680931428

हिंदू धर्मग्रंथों का सार, जानिए किस ग्रंथ में क्या है?



अधिकतर हिंदुओं के पास अपने ही धर्मग्रंथ को पढ़ने की फुरसत नहीं है। वेद, उपनिषद पढ़ना तो दूर वे गीता तक को नहीं पढ़ते, जबकि गीता को चंद घंटों में पढ़ा जा सकता है। हालांकि कई जगह वे भागवत पुराण सुनने या रामायण का अखंड पाठ करने के लिए समय निकाल लेते हैं या घर में सत्यनारायण की कथा करवा लेते हैं। लेकिन आपको यह जानकारी होना चाहिए कि पुराण, रामायण और महाभारत हिंदुओं के धर्मग्रंथ नहीं हैं। धर्मग्रंथ तो वेद ही है।

शास्त्रों को दो भागों में बांटा गया है:- श्रुति और स्मृति। श्रुति के अंतर्गत धर्मग्रंथ वेद आते हैं और स्मृति के अंतर्गत इतिहास और वेदों की व्याख्या की पुस्तकें पुराण, महाभारत, रामायण, स्मृतियां आदि आते हैं। हिंदुओं के धर्मग्रंथ तो वेद ही है। वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गीता है। आओं जानते हैं कि उक्त ग्रंथों में क्या है:-

वेदों में क्या है : वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, इतिहास, संस्कार, रीति-रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है। वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गंधर्ववेद और अथर्ववेद का स्थापत्यवेद ये क्रमशः चारों वेदों के उपवेद बतलाए गए हैं।

ऋग्वेद : ऋक अर्थात् स्थिति और ज्ञान। इसमें भौगोलिक स्थिति और देवताओं के आवाहन के मंत्रों के साथ बहुत कुछ है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सौर चिकित्सा, मानस चिकित्सा और हवन द्वारा चिकित्सा आदि की भी जानकारी मिलती है।

यजुर्वेद : यजु अर्थात् गतिशील आकाश एवं कर्म। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियां और यज्ञों में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ के अलावा तत्त्वज्ञान का वर्णन है। तत्त्व ज्ञान अर्थात् रहस्यमयी ज्ञान। ब्रह्मांड, आत्मा, ईश्वर और पदार्थ का ज्ञान। इस वेद की दो शाखाएँ हैं शुक्ल और कृष्ण।

सामवेद : साम का अर्थ रूपांतरण और संगीत। सौम्यता और उपासना। इस वेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय रूप है। इसमें सविता, अग्नि और इंद्र देवताओं के बारे में जिक्र मिलता है। इसी से शास्त्रिय संगीत और नृत्य का जिक्र भी मिलता है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है। इसमें संगीत के विज्ञान और मनोविज्ञान का वर्णन भी मिलता है।

अथर्ववेद : अथर्व का अर्थ है कपन और अथर्व का अर्थ अकपन। इस वेद में रहस्यमयी विद्याओं, जड़ी बूटियों, चमत्कार और आयुर्वेद आदि का जिक्र है। इसमें भारतीय परंपरा और ज्योतिष का ज्ञान भी मिलता है।

उपनिषद् क्या है : उपनिषद वेदों का सार है। सार अर्थात् निचोड़ या संक्षिप्त। उपनिषद भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार

हैं, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के स्रोत हैं। ईश्वर है या नहीं, आत्मा है या नहीं, ब्रह्मांड कैसा है आदि सभी गंभीर, तत्व ज्ञान, योग, ध्यान, समाधि, मोक्ष आदि की बातें उपनिषद में मिलेगी। उपनिषदों को प्रत्येक हिंदुओं को पढ़ना चाहिए। इन्हें पढ़ने से ईश्वर, आत्मा, मोक्ष और जगत के बारे में सच्चा ज्ञान मिलता है।

वेदों के अंतिम भाग को 'वेदांत' कहते हैं। वेदांतों को ही उपनिषद कहते हैं। उपनिषद में तत्व ज्ञान की चर्चा है। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 108 हैं, परंतु मुख्य 12 माने गए हैं, जैसे- 1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य, 7. तैत्तिरीय, 8. ऐतरेय, 9. छांदोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11. कौषीतकि और 12. श्वेताश्वतर।

षड्दर्शन क्या है : वेद से निकला षड्दर्शन : वेद और उपनिषद को पढ़कर ही 6 ऋषियों ने अपना दर्शन गढ़ा है। इसे भारत का षड्दर्शन कहते हैं। दरअसल यह वेद के ज्ञान का श्रेणीकरण है। ये छह दर्शन हैं:- 1. न्याय, 2. वैशेषिक, 3. सांख्य, 4. योग, 5. मीमांसा और 6. वेदांत। वेदों के अनुसार सत्य या ईश्वर को किसी एक माध्यम से नहीं जाना जा सकता। इसीलिए वेदों ने कई मार्गों या माध्यमों की चर्चा की है।

गीता में क्या है ? : महाभारत के 18 अध्याय में से एक भीष्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता में भी कुल 18 अध्याय हैं। 10 अध्यायों की कुल श्लोक संख्या 700 है। वेदों के ज्ञान को नए तरीके से किसी ने व्यवस्थित किया है तो वह हैं भगवान श्रीकृष्ण। अतः वेदों का पॉकेट संस्करण है गीता जो हिंदुओं का सर्वमान्य एकमात्र ग्रंथ है। किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह वेद या उपनिषद पढ़ें उनके लिए गीता ही सबसे उत्तम धर्मग्रंथ है। गीता को बार-बार पढ़ने के बाद ही वह समझ में आने लगती है।

गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म मार्ग की चर्चा की गई है। उसमें यम-नियम और धर्म-कर्म के बारे में भी बताया गया है। गीता ही कहती है कि ब्रह्म (ईश्वर) एक ही है। गीता को बार-बार पढ़ेंगे तो आपके समक्ष इसके ज्ञान का रहस्य खुलता जाएगा। गीता के प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रंथ लिखा जा सकता है।

गीता में सृष्टि उत्पत्ति, जीव विकासक्रम, हिन्दू संदेवाहक क्रम, मानव उत्पत्ति, योग, धर्म, कर्म, ईश्वर, भगवान, देवी, देवता, उपासना, प्रार्थना, यम, नियम, राजनीति, युद्ध, मोक्ष, अंतरिक्ष, आकाश, धरती, संस्कार, वंश, कुल, नीति, अर्थ, पूर्वजन्म, जीवन प्रबंधन, राष्ट्र निर्माण, आत्मा, कर्मसिद्धांत, त्रिगुण की संकल्पना, सभी प्राणियों में मैत्रीभाव आदि सभी की जानकारी है।

श्रीमद्भगवद्गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी है। इसके प्रत्येक श्लोक में ज्ञानरूपी प्रकाश है, जिसके प्रस्फुटित होते ही अज्ञान का अंधकार नष्ट हो जाता है। ज्ञान-भक्ति-कर्म योग मार्गों की विस्तृत व्याख्या की गयी है, इन मार्गों पर चलने से व्यक्ति निश्चित ही परमपद का अधिकारी बन जाता है। गीता को अर्जुन के अलावा और संजय ने सुना और उन्होंने धृतराष्ट्र को सुनाया। गीता में श्रीकृष्ण ने- 574, अर्जुन ने- 85, संजय ने 40 और धृतराष्ट्र ने- 1 श्लोक कहा है।

संकलन : मेंघना कुमावत,
उपाध्यक्ष, महिला मोर्चा, भाजपा सिविल लाइंस मंडल जयपुर

जब दूसरों को तौलें, तो पहले स्वयं को तराजू में रखें

(एक आत्मविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण जो जीवन को समझने की राह खोलता है)



हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। हम दिनभर लोगों से मिलते हैं, बातचीत करते हैं, और कहीं ना कहीं, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनके आचरण, वाणी और व्यवहार का मूल्यांकन करते हैं। यह मानव स्वभाव का अंग है। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब यह मूल्यांकन आलोचना का रूप ले लेता है — और हम दूसरों की कमियों को गिनाने में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि स्वयं पर एक बार भी दृष्टि नहीं डालते।

एक सरल, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण बात अक्सर अनदेखी रह जाती है: “जब भी आप किसी को तौलें, एक पल स्वयं को भी उसी तराजू में रखकर देखें।”

यही आत्मविश्लेषण का आरंभ है — और यहीं से जीवन को समझने की सच्ची प्रक्रिया शुरू होती है।

आत्मचिंतन: जीवन की पहली शिक्षा : हममें से अधिकांश लोग दूसरों की कमियाँ बहुत जल्दी पहचान लेते हैं। हमें लगता है कि फलां व्यक्ति ने गलत व्यवहार किया, या किसी का निर्णय असंगत था। लेकिन क्या कभी हमने यह सोचा कि उसी परिस्थिति में हम होते तो हमारा व्यवहार क्या होता? क्या हम भी वही गलतियाँ नहीं दोहराते?

आत्मचिंतन, अर्थात् स्वयं के आचरण, विचार और भावनाओं पर गहराई से विचार करना — जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा है। यह हमें भीतर से न केवल सजग बनाता है, बल्कि हमारे निर्णयों को भी संतुलित और मानवीय बनाता है। दूसरों को समझने के लिए, पहले स्वयं को समझना आवश्यक है।

जब तक हम अपने दृष्टिकोण, अनुभव और पूर्वग्रहों को पहचान नहीं पाते, तब तक हम दूसरों के निर्णयों को निष्पक्ष रूप से नहीं देख सकते। हर व्यक्ति का जीवन उसकी अपनी परिस्थितियों, संघर्षों और विकल्पों से बना होता है। बाहर से बैठकर किसी को दोष देना जितना आसान है, उतना ही कठिन होता है उस व्यक्ति की जगह खुद को रखकर देखना।

यही कारण है कि बुद्धिमान व्यक्ति आलोचना से पहले सोचते हैं, और सोचने से पहले स्वयं से प्रश्न करते हैं: “क्या मैं भी कभी इसी प्रकार की भूल कर चुका हूँ?” “क्या मेरी सोच हर बार न्यायपूर्ण रही है?”

जब ये प्रश्न हमारे भीतर उठते हैं, तभी सच्चा आत्मबोध जन्म लेता है।

न्याय और निष्पक्षता का आधार: आत्म-समीक्षा

सच्चा न्याय तब होता है जब वह केवल तथ्यों पर नहीं,

बल्कि संवेदना और निष्पक्ष दृष्टि पर आधारित हो। अगर हम दूसरों को कठघरे में खड़ा करें, लेकिन खुद के दोषों से मुंह मोड़ लें — तो वह न्याय नहीं, पक्षपात है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, “जैसे तुम दूसरों के लिए सोचते हो, वैसे ही खुद के लिए सोचो — और जैसे खुद के लिए न्याय चाहते हो, वैसे ही दूसरों को दो।”

यह केवल नैतिक शिक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन की नींव है।

विवेकशील समाज की दिशा में एक कदम

यदि हर व्यक्ति दूसरों के दोष गिनाने से पहले एक बार रुककर अपने भीतर झाँके, तो शायद हमारा समाज अधिक सहिष्णु, समझदार और सहानुभूति-पूर्ण बन सके। रिश्तों में कटुता घटे, संवाद बढ़े, और एक-दूसरे को समझने की मानसिकता पनपे।

आज के दौर में जब लोग त्वरित प्रतिक्रिया और सतही आलोचना के आदी हो गए हैं, तब आत्मविश्लेषण की यह आदत हमें भीतर से मजबूत और बाहर से विनम्र बनाती है।

उपसंहार: जीवन को समझना वास्तव में कोई रहस्य नहीं है। इसकी जटिलता हमारी दृष्टि में छिपी होती है, ना कि वास्तविकता में।

जब हम दूसरों को आँकने से पहले, स्वयं को परखने लगते हैं — तब हम जीवन की गहराई में प्रवेश करते हैं।

यही आत्मबोध हमें न केवल बेहतर इंसान बनाता है, बल्कि एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण भी करता है।

इसलिए — जब भी आप किसी को तौलें, पहले स्वयं को तराजू में रखें। शायद वहीं से सच्चा जीवन, सही सोच और एक नई शुरुआत संभव है।

—सीमा कुमावत

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर तिरंगा यात्रा निकाली

आतंकवाद के खिलाफ ‘ऑपरेशन सिंदूर’ की गौरवशाली सफलता पर अल्बर्ट हॉल, जयपुर से विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसमें मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा, उप मुख्यमंत्री दियाकुमारी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत



तथा राजस्थान सरकार के अनेक मंत्रीगण, भाजपा के प्रदेश पदाधिकारी, विधायक एवं कार्यकर्ता तथा हजारों लोग उपस्थित रहें। भारतीय सेना के जवानों के अदम्य साहस और वीरता सम्मान में समस्त राजस्थान की ओर से अभिनंदन प्रकट किया। माँ भारती के अमर सपूतों को श्रद्धा सुमन भी अर्पित करके नमन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: तन और मन के स्वास्थ्य का अद्भुत संगम

योग, भारत की प्राचीन परंपरा का एक अनमोल उपहार है, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को भी बढ़ावा देता है। इसकी महत्ता को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के उद्देश्य से, हर वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। यह दिन योग के सार्वभौमिक लाभों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और लोगों को इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 की विषयवस्तु 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' होगी। यह गतिविधियां स्थिरता और एकता के लिए वैश्विक आह्वान के साथ योग को संरेखित करते हुए, शारीरिक, मानसिक और पर्यावरणीय कल्याण को बढ़ावा देने में योग की भूमिका को उजागर करती है।

जीवन की हर सांस है बहुमूल्य।

प्राणायाम है नवजीवन के समतुल्य।।

बच्चे-बूढ़े सब मिल करे योग।

तन-मन अपना रखे निरोग।।

दिमाग तेज करना हो या वजन घटना-बढ़ाना, सब में सार्थक है योग। बढ़ती उम्र में होंगे वाली परेशानियों से, बुजुर्ग योगकर खुद को बचा सकते हैं। योग तनाव घटाता है तथा डिप्रेशन दूर करता है। यह त्रिदोष वात, कफ और पित्त के दोषों का निवारण करता है। थायराइड रोगी भी योग से ठीक हुए हैं तथा मोटापा कम करने भी कारगर है। यह नकारात्मकता को कम करता है यह एकाग्रता बढ़ाता है।

योग में रोगों की रोकथाम और कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा देने की क्षमता है। सूर्य नमस्कार में 12 तरह के आसन किये जाते हैं, इसे 30 मिनट करने पर 400 कैलोरी बर्न होती है। जबकि इतने समय जिम में अभ्यास करने पर इससे आधी कैलोरी ही बर्न हो पाती है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की उत्पत्ति

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की पहल भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में 27 सितंबर 2014 को की गई थी। उन्होंने अपने संबोधन में योग को "भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार" बताया और विश्व समुदाय से इसे अपनाने का आह्वान किया। इस प्रस्ताव को विश्व के अधिकांश देशों का अभूतपूर्व समर्थन मिला और संयुक्त राष्ट्र ने 11 दिसंबर 2014 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाने की घोषणा की।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का महत्व

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस केवल एक वार्षिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह योग के महत्व और उसके लाभों को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने का एक आंदोलन है। इसका महत्व निम्नलिखित कारणों से और भी बढ़ जाता है:

स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देना: योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह तनाव कम करने, लचीलापन बढ़ाने, मांसपेशियों को मजबूत करने, रक्त परिसंचरण में सुधार करने और समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

शांति और सद्भाव को बढ़ावा देना: योग मन को शांत करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। यह व्यक्ति को अपने भीतर शांति और सद्भाव का अनुभव करने में मदद करता है, जिससे समाज में भी सकारात्मकता और सौहार्द का वातावरण बनता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना: योग भारत की एक प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से, यह विश्व के विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोगों को एक साथ लाता है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ बढ़ती है।

जीवनशैली में बदलाव को प्रोत्साहित करना: आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, लोग अक्सर तनाव और अस्वस्थ जीवनशैली का शिकार हो जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस लोगों को योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने और एक स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विश्व स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों के माध्यम से मनाया जाता है। इन आयोजनों में सामूहिक योग प्रदर्शन, योग कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान शामिल होते हैं। लोग पार्कों, सार्वजनिक स्थलों और अपने घरों में भी योग करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: योग विशेषज्ञों की राय : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की महत्ता और प्रासंगिकता को और गहराई से समझने के लिए। उनके विचारों और अनुभवों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है:

डॉ. राधिका शर्मा, योग थेरेपिस्ट: "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सिर्फ एक औपचारिकता नहीं, बल्कि एक वैश्विक आंदोलन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि योग केवल कुछ आसनों का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक समग्र तरीका है। आज की तनावपूर्ण जीवनशैली में, योग मन को शांत करने, एकाग्रता बढ़ाने और आंतरिक शांति प्राप्त करने का एक अचूक उपाय है। योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। नियमित अभ्यास से शारीरिक स्वास्थ्य तो सुधरता ही है, मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी बेहतर होता है।"

स्वामी आनंद, योग शिक्षक और आध्यात्मिक गुरु: "योग भारत की प्राचीन संस्कृति का एक दिव्य उपहार है। यह आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का मार्ग है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इस ज्ञान को पूरी दुनिया तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। योग हमें सिखाता है कि हम अपने शरीर, मन और आत्मा के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित करें। यह हमें वर्तमान क्षण में जीना सिखाता है और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान करता है।

श्रीमती प्रिया वर्मा, अंतर्राष्ट्रीय योग प्रशिक्षिका: लोग अब यह समझने लगे हैं कि योग एक थेरेपी भी है। यह लचीलापन, शक्ति और संतुलन तो बढ़ाता ही है, साथ ही यह चिंता, अवसाद और अनिद्रा जैसी समस्याओं से भी मुक्ति दिलाने में सहायक है। योग को अपनाएं, क्योंकि यह उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और मजबूत बनाएगा।"

श्री विक्रम सिंह, शारीरिक शिक्षा विशेषज्ञ और योग साधक

: यह मांसपेशियों एवं हृदय स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस लोगों को इन वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराने का एक मंच प्रदान करता है। योग एक संपूर्ण व्यायाम है जो शरीर के हर अंग को लाभ पहुंचाता है।''

यह लोगों को एक स्वस्थ, शांत और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित भी करता है। यह दिन हमें योग के प्राचीन ज्ञान को आधुनिक जीवनशैली में अपनाने और इसके अनमोल लाभों को प्राप्त करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

नीतू सैनी योग प्रशिक्षक, मो.दे.रा.यो.: सुश्री सैनी को निमोनिया और श्वसन संबंधी समस्याओं से लम्बे समय से जूझ रही थीं। लेकिन मो.दे.रा.यो.सं. में, षट्कर्म के माध्यम से, उनका स्वास्थ्य में सुधार हुआ। योग ने न केवल उनके स्वास्थ्य को संवर्धित किया, बल्कि उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: डॉक्टरों की राय : एम्स, नई दिल्ली में सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च (सीआईएमआर) में आयोजित, 'एडवांस इन इंटीग्रेटिव मेडिसिन' पर पहले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा के तालमेल का पता लगाने के लिए वैश्विक विशेषज्ञ एक साथ एक मंच पर आए। कार्यक्रम के मेजबान, सीआईएमआर, एम्स, नई दिल्ली 2016 से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ योग को एकीकृत करने पर काम कर रहे हैं। 20 एम्स विभागों के साथ काम किया है (उनके अध्ययन की मुख्यधारा स्वास्थ्य देखभाल में, विशेष रूप से न्यूरोलॉजिकल और कार्डियक स्थितियों के इलाज में योग की भूमिका एवं इसकी प्रभावशीलता की पुष्टि करते हैं।

सीआईएमआर के प्रभारी संस्थापक, **प्रोफेसर डॉ. गौतम शर्मा** ने प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत किए। शोध से पता चलता है कि योग माइग्रेन को कम करता है, सिंकोप एपिसोड (अस्थायी अचेतना) को कम करता है, और हृदय संबंधी स्वास्थ्य को बढ़ाता है।

श्री अमित शर्मा योग प्रशिक्षक, मो.दे.रा.यो.सं., नई दिल्ली: वर्षों की विशेषज्ञता के साथ, उन्होंने गर्दन, कंधे, शरीर का मध्य भाग और सौम्य शारीरिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सूक्ष्म व्यायाम के प्रमुख घटकों पर एक गहन अंतर्दृष्टि साझा की। श्री शर्मा ने इसके सौम्य लेकिन प्रभावी अभ्यासों पर जोर दिया जो परिसंचरण में सुधार करते हैं, कठोरता को कम करते हैं और शरीर को उन्नत मुद्राओं के लिए तैयार करते हैं। उन्होंने लंबे समय तक बैठने और खराब मुद्रा के कारण होने वाले तनाव का मुकाबला करने में गर्दन की गतिविधियों के महत्व पर प्रकाश डाला। सरलता से झुकना और मुड़ने जैसे अभ्यास, तनाव को दूर करने और गतिशीलता में सुधार करने में मदद करते हैं।

सीसीआरवाईएन के निदेशक डॉ. राघवेंद्र राव ने मानव स्वास्थ्य पर आईडीवाई और योग अभ्यास के प्रभाव का आकलन करने के लिए 2021 में एक शोध सर्वेक्षण किया। उनके निष्कर्षों ने तनाव, विश्रान्ति में कठिनाई और गतिहीन जीवनशैली सहित शारीरिक निष्क्रियता से जुड़े जोखिमों पर प्रकाश डाला। योग अभ्यासकर्ताओं में सूजन की स्थिति में काफी सुधार हुआ, प्रतिरक्षा प्रणाली की दक्षता में वृद्धि हुई और मानसिक कल्याण में भी काफी वृद्धि हुई।

डॉ. आर.एस. भोगल, संयुक्त निदेशक, वैज्ञानिक अनुसंधान

विभाग, कैवल्यधाम ने अपने शोध में योग के गहन आयामों पर प्रकाश डाला, जिसमें बताया गया कि कैसे सामान्य योग अभ्यासक्रम को मन-शरीर के संयोजन को अनुकूलित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। डॉ. भोगल के अनुसार, सामान्य योग अभ्यासक्रम श्रेणी क्षेत्र में परिष्कृत रक्त परिसंचरण के माध्यम से कुंडलिनी ऊर्जा को सक्रिय करता है, कार्बन डाइऑक्साइड उत्पादन को कम करता है और फेफड़ों और हृदय गतिविधि को धीमा करता है, जिससे एक पारलौकिक अनुभव होता है।

डॉ. अरविंद मल्होत्रा, हृदय रोग विशेषज्ञ : नियमित योगासन और प्राणायाम रक्तचाप को नियंत्रित करने, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने और हृदय की मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद करते हैं। तनाव हृदय रोगों का एक प्रमुख कारण है, और योग तनाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में सहायक है।

डॉ. सीमा गुप्ता, मनोचिकित्सक : योग मन को शांत करता है, नकारात्मक विचारों को कम करता है और भावनात्मक संतुलन को बेहतर बनाता है। ध्यान और श्वास व्यायाम विशेष रूप से चिंता और तनाव के प्रबंधन में प्रभावी हैं।

डॉ. रमेश कुमार, अस्थि रोग विशेषज्ञ : यह शरीर की लचीलापन बढ़ाता है, जोड़ों को मजबूत करता है और पीठ दर्द जैसी समस्याओं को कम करने में मदद करता है। यह सभी उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद है, खासकर उन लोगों के लिए जो गतिहीन जीवनशैली जीते हैं या जोड़ों की समस्याओं से पीड़ित हैं। कुछ विशिष्ट योगासन हड्डियों के घनत्व को बनाए रखने और ऑस्टियोपोरोसिस के खतरे को कम करने में भी सहायक हो सकते हैं।

डॉ. प्रिया सिंह, सामान्य चिकित्सक : यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने और बीमारियों की रोकथाम में भी सहायक है। नियमित योगाभ्यास पाचन क्रिया को सुधारता है, नींद की गुणवत्ता बढ़ाता है और ऊर्जा के स्तर को बनाए रखता है।''

इन डॉक्टरों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि योग न केवल एक पारंपरिक अभ्यास है, बल्कि यह वैज्ञानिक रूप से भी स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार से लाभकारी सिद्ध हुआ है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि स्वस्थ रहने के लिए हमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से सक्रिय रहना आवश्यक है, और योग इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अनुपम खेर, भारतीय अभिनेता एवं निर्देशक: योग सिर्फ शरीर के लिए नहीं है; यह मन और आत्मा के लिए है। यह धैर्य, संतुलन और आत्म-अनुशासन सिखाता है, जो जीवन के लिए ज़रूरी हैं।

निष्कर्ष : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक महत्वपूर्ण अवसर है जो हमें योग के प्राचीन ज्ञान और उसके आधुनिक लाभों के बारे में याद दिलाता है। यह दिन हमें अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकालकर अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है। योग केवल व्यायाम का एक रूप नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक तरीका है जो हमें प्रकृति, समाज और स्वयं के साथ सामंजस्य स्थापित करने में मदद करता है। आइए, इस अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर हम सब मिलकर योग को अपनाएं और एक स्वस्थ, शांत और खुशहाल जीवन जिएं।

- सम्पादकीय टीम

रामराज्य में पर्यावरण-नीति



‘पर्यावरण’ दो शब्दों का संयोजन है ‘परि’ तथा ‘आवरण’। ‘परि’ का आशय चारों ओर तथा ‘आवरण’ का आशय ढकना या आच्छादन करना है। जिंसवर्ट के शब्दों में ‘प्रत्येक वह वस्तु जो किसी चीज को चारों तरफ से घेरती है एवं उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है, ‘पर्यावरण’ कहलाती है।’ नैसर्गिक प्रक्रियाएँ प्रदूषण को कम करने एवं पर्यावरण को शुद्ध करने में सहायक होती हैं। उदाहरणार्थ, सूर्य की किरणों, वर्षा के जल, बहती हवा, नदियों के प्रवाह, वनस्पति आदि से पर्यावरण नैसर्गिक रूप में शुद्ध होता रहता है, किन्तु मानव की क्रियाएँ पर्यावरण को दूषित तथा विकृत करती रहती हैं, जो मानव समाज के लिये भी हानिकारक ही हैं। कभी-कभी तो मानव की क्रियाओं से पर्यावरण इतना अधिक दूषित हो जाता है कि नैसर्गिक प्रक्रियाएँ भी पूर्णतः इसे शुद्ध करने में असमर्थ रहती हैं। वर्तमान में पर्यावरण की प्रायः यही स्थिति हो गयी है। वैज्ञानिकों को चिन्ता है कि इस निरन्तर बढ़ते हुए प्रदूषण को कैसे नियन्त्रित किया जाय और पर्यावरण-संतुलन कैसे स्थापित किया जाय? पर्यावरण-सन्तुलन विकट समस्या आज के युग की तथा 21 वीं सदी की प्रमुख चुनौती बन गयी है।

प्रदूषण-निवारण एवं पर्यावरण-प्रबन्ध के लिये शासन तथा जनता दोनों का समान उत्तरदायित्व बनता है। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने इस बात पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के राजसिंहासन पर आसीन होते ही सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो जाता है, सारे भय-शोक दूर हो जाते हैं एवं दैहिक, दैविक तथा भौतिक तापों से मुक्ति मिल जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि रामराज्य में किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं है। इसीलिये कोई भी अल्प मृत्यु, रोग-पीड़ा से ग्रस्त नहीं है।

राम राज बैठें त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ।।

दैहिक दैविक भौतिक तापा । रामराज नहिं काहुहि ब्यापा ।।

अल्पमृत्यु नहीं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ।।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के 41वें सर्ग में श्री भरतजी श्रीराम के राज्य के विलक्षण प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहते हैं -

अनामयश्च मर्त्यानां साग्रो मासो गतो हायम् ।

जीर्णानामपि सत्त्वानां मृत्युर्यायाति राघव ।

अरोगप्रसवा नार्यो वपुष्मन्तो हि मानवाः ।

हर्षश्चाभ्यधिको राजञ्जन्यस्य पुरवासिनः ।

काले वर्षति पर्जन्यः पातयन्नमृतं पयः ।

वाताश्चापि प्रवान्तेते स्पर्शयुक्ताः सुखाः शिवाः ।

ईदृशो नश्चिरं राजा भवेदिति नरेश्वरः ।

कथयन्ति पुरे राजन् पौरजानपदास्तथा ।

राघव ! आपको राज्य पर अभिषिक्त हुए एक मास से अधिक

समय हो गया है। तब से सभी लोग नीरोग दिखायी देते हैं। बूढ़े प्राणियों के पास भी मृत्यु नहीं फटकती है। स्त्रियाँ बिना कष्ट के प्रसव करती हैं। सभी मनुष्यों के शरीर हृष्ट-पुष्ट दिखायी देते हैं। राजन्! पुरवासियों में बड़ा हर्ष छा रहा है। मेघ अमृत के समान जल गिराते हुए समय पर वर्षा करते हैं। हवा ऐसी चलती है कि इसका स्पर्श शीतल एवं सुखद जान पड़ता है। राजन्! नगर एवं जनपद के लोग इस पुरी में कहते हैं कि हमारे लिये चिरकाल तक ऐसे ही प्रभावशाली राजा रहे।

महाभारत में भीष्म पितामह कहते हैं कि काल का कारण राजा है या राजा का कारण काल है, इसके विषय में संशय नहीं करना चाहिये। राजा ही काल का कारण होता है। राजा के बुरे-भले होने के साथ काल पलटा खा जाता है। **‘कालस्य कारणं राजा कालो न राजकारणम्। इति संशयो माभूद्राजा कालस्य कारणम्।।’**

पाप से हानि ही नहीं होती, वातावरण भी दूषित होता है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। रामराज्य में पाप का अस्तित्व नहीं है, इसलिये दुःख लेशमात्र भी नहीं है। पर्यावरण की शुद्धि तथा उसके प्रबन्धन के लिये रामराज्य में सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ की जाती हैं। वृक्षारोपण, बाग-बगीचे, फूल-फलवाले पौधे तथा सुगन्धित वाटिका लगाने में सब लोग रुचि लेते हैं। नगर के भीतर तथा बाहर का दृश्य मनोहारी है -

सुमन बाटिका सबहिं लगाई । बिबिध भाँति करि जतन बनाई ।।

लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहिं सदा बसंत कि नाई ।।

(रा.च.मा. 7/28/1-2)

बापीं तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।

सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ।।

बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।

आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं ।।

(रा.च.मा. 7/29 छंद)

अर्थात् सभी लोगों ने विविध प्रकार के फूलों की वाटिकाएँ अनेक प्रकार के यत्न करके बनाकर लगायी हैं। बहुत-सी जाति की सुहावनी ललित बेल सदा बसन्त की भाँति फूला करती हैं। नगर की शोभा का जहाँ वर्णन नहीं किया जा सकता, वहाँ बाहर चारों ओर का दृश्य अत्यन्त रमणीय है। रामराज्य में बावलियाँ और कूप जल से भरे रहते हैं, जलस्तर भी काफी ऊपर है। तालाब एवं कुँओं की सीढियाँ भी सुन्दर एवं सुविधाजनक हैं, जल निर्मल है। अवधपुरी में सूर्यकुण्ड, विद्याकुण्ड, सीताकुण्ड, हनुमानकुण्ड, वसिष्ठकुण्ड, चक्रतीर्थ आदि तालाब हैं, जो प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त हैं। नगर के बाहर 12 वन हैं अशोक, संतानक, मंदार, पारिजात, चन्दन, चम्पक, प्रमोद, आम्र, पनस, कदम्ब एवं ताल।

गीतावली में भी सुन्दर वनों-उपवनों के मनोहारी दृश्य का वर्णन मिलता है-

बन उपवन नव किसलय कुसुमित नाना रंग।

बोलत मधुर मुखर खग पिकबर गुंजत भृंग ॥

(गीतावली, उत्तरकाण्ड पद 21/3)

अर्थात् अयोध्या के वन-उपवनों में नवीन पत्ते और कई रंग के पुष्प खिले हुए हैं, चहचहाते हुए पक्षी और सुन्दर कोकिल सुमधुर बोली बोल रहे हैं, भौरें गुंजार कर रहे हैं।

महाराजा स्वयं अपने राज्य के उपवनों में निरीक्षण करने भी जाते हैं, जो यह दर्शाता है कि शासक भी पर्यावरण के प्रति पूर्णतः सचेत है -

भ्रातन्ह सहित राम एक बारा। संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥

सुंदर उपवन देखन गए। नव तरु कुसुमित पल्लव नए ॥

रामराज्य में जल-प्रदूषण बिल्कुल नहीं है। स्थान-स्थान पर पर पृथक् पृथक् घाट बंधे हुए हैं। कीचड़ कहीं भी नहीं होता है। नदियों का जल गहरा एवं निर्मल हैं। पशुओं के उपयोग हेतु घाट नगर से दूर बने हुए हैं। पानी भरने के घाट अलग हैं, जहाँ कोई भी व्यक्ति स्नान नहीं करता। नहाने के लिये राजघाट अलग से है, जहाँ चारों वर्णों के लोग स्नान करते हैं -

उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर।

बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा।

जहँ जल पिअहिं बाजिगज ठाटा ॥

पनिघट परम मनोहर नाना।

तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥

(रा.च.मा. 7/28, 7/29/1-2)

वायु-प्रदूषण भी रामराज्य में दिखायी नहीं देता। शीतल, मन्द तथा सुगन्धित वायु सदैव बहती रहती है-

गुंजत मधुकर मुखर मनोहर। मारुत त्रिबिध सदा बह सुन्दर ॥

(रा.च.मा. 7/28/3)

रामराज्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ चारित्रिक प्रदूषण बिल्कुल नहीं है। सभी पुरुष एकनारी-व्रत में रत हैं और स्त्रियाँ भी पतिव्रत धर्म में रत हैं। महारानी सीता की भाँति सभी स्त्रियाँ मन, वचन एवं कर्म से अपने पति का हित चाहती हैं -

एकनारि व्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

(रा.च.मा. 7/22/8)

रामराज्य में तो यहाँ तक ध्यान रखा जाता है कि जो पौधे चरित्र-निर्माण में सहायक होते हैं, उनका रोपण अधिक किया जाता है। पर्यावरण-विशेषज्ञों तथा आयुर्वेद शास्त्र की मान्यता है कि तुलसी का पौधा जहाँ सभी प्रकार से स्वास्थ्य के लिये उपयोगी है, वहाँ वह चरित्र-निर्माण में भी सहायक है। यही कारण है कि रामराज्य में ऋषि-मुनि नदियों तथा तालाबों में किनारे तुलसी के पौधे लगाते हैं-

तीर तीर तुलसिका सुहाई। बूंद बूंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥

(रा.च.मा.7/29/6)

रामराज्य में सब लोग सत् साहित्य का अनुशीलन करते हैं, सब चरित्रवान् हैं, सब संस्कारवान् हैं, सबके घरों में सुखद वातावरण हैं और सब शासन से सन्तुष्ट हैं। जहाँ राजा अपनी प्रजा का पालन पुत्रवत् करता है, वहाँ का समाज निश्चित ही सदा प्रसन्न एवं समृद्ध रहता है। अवधपुरवासियों की सुख-सम्पदा का वर्णन हजार शेषजी भी नहीं कर सकते, जहाँ श्रीरामचन्द्र राजा है -

अवधपुरी बासिन्ह कर सुख संपदा समाज।

सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥

(रा.च.मा. 7/26)

इस प्रकार रामराज्य में किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं है। पर्यावरण-प्रबंधन अद्वितीय है। राजा एवं प्रजा में अटूट स्नेह, सम्मान एवं सामंजस्य है, प्राणीमात्र सुखी हैं। मनुष्यों में जहाँ वैर-भाव नहीं है, वहाँ पशु-पक्षी भी अपने सहज वैर-भाव को त्याग देते हैं। वन के वृक्ष बारह मास फलते-फूलते हैं। हाथी एवं सिंह एक साथ रहते हैं परस्पर प्रेम रखते हैं। वन में पक्षियों के अनेक झुण्ड निर्भय होकर विचरण करते हैं। उन्हें शिकारी का भय नहीं है। लताएँ तथा वृक्ष माँगने पर मधु टपकाते हैं। गौएँ कामधेनु की तरह मनचाहा दूध देती हैं। पृथ्वी सदा खेती से भरी रहती है। चन्द्रमा उतनी ही शीतलता और सूर्य उतना ही ताप देता है, जितनी जरूरत होती है। पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दी हैं। सब नदियाँ श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल, स्वादिष्ट एवं सुख देने वाला जल बहाती हैं। जब जितनी जरूरत होती है, मेघ उतना ही जल बरसाते हैं-

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन ॥

खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥

कूजहिं खग मृग नाना वृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥

लता बिटप मागें मधु चवहीं मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ॥

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।

मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज।

(रा.च.मा. 7/23/1-3, 5; 7/23)

रामराज्य में पर्यावरण-प्रबंधन का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी ने सूत्ररूप में यह संकेत दिया है कि समाज के पर्यावरण-सन्तुलन एवं पर्यावरण-प्रबंधन में शासक एवं प्रजा का संयुक्त उत्तरदायित्व होता है। दोनों के परस्पर सहयोग, स्नेह, सम्मान, सौहार्द तथा सामंजस्य से ही समाज एवं राष्ट्र को प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है। प्रकृति के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिये। पर्यावरण-चेतना का शासक एवं प्रजा दोनों में पर्याप्त विकास होना चाहिये। राज्य की व्यवस्था में प्रजा का पूर्ण सहयोग हो और प्रजा की सुख-सुविधा का शासक पूरा-पूरा ध्यान रखे यह रामराज्य का सन्देश है। निजी स्वार्थ एवं राष्ट्रीय हित में टकराहट नहीं होना चाहिये तथा राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि समझा जाना चाहिये। शासक एवं प्रजा के सामूहिक प्रयासों एवं सहयोग से ही समाज में वांछित क्रान्तिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है और एक आदर्श व्यवस्था स्थापित की जा सकती है।

- प्रो. बी.के. कुमावत, उज्जैन

पर्यावरण दिवस 5 जून पर विशेष

भयावह होती पर्यावरण की स्थिति

हमारे पर्यावरण का आधार है पृथ्वी। प्रकृति ने पृथ्वी पर पर्वत, वन, जल, वायु जैसे स्रोत दिए हैं। इसलिए इस धरती पर जीव-जंतु, पशु-पक्षी, मानव आदि सभी का जीवन यापन सम्भव हो पाया है। इनमें सबसे प्रमुख है प्राण वायु जो हमारे वृक्षों से उपलब्ध होती है। दूसरा है जल, इसके बिना भी जीवन सम्भव नहीं। हमारी पृथ्वी पर पर्वत, वन, स्वच्छ जल प्रकृति की देन है। भूमि पर खेती के लिए पानी की आवश्यकता है और पेड़-पौधे भी तब ही जीवित रहेंगे जब धरती पर पर्याप्त पानी हो।

मानव ने अपने विकास के साथ पेड़ों की अंधाधुंध कटाकई करके वन क्षेत्र सीमित कर दिया। खनन कार्य और औद्योगिकरण ने हमारे पर्वतों और जल स्रोतों का अत्यधिक दोहन किया। हमारी धरती पर 80% पानी है इसमें अधिकांश समुद्र में है तथा सतही जल 20% है। इसमें से अधिकांश बर्फीले पहाड़ और ग्लेशियर पर हैं और केवल 3% जल ही पीने योग्य है। औद्योगिकरण और शहरीकरण ने वृक्षों की अत्यधिक कटाई की और औद्योगिक वेस्ट ने हमारी पवित्र नदियों गंगा व यमुना तक को प्रदूषित कर दिया है। अब सतही जल स्रोत प्रायः सूख गये हैं और भू-जल भी अत्यधिक गहरा हो गया है। शहरों में वायु प्रदूषण और ध्वनी प्रदूषण ने स्थिति को और गम्भीर बना दिया है। दिल्ली और NCR के शहरों की स्थिति चिंतनीय है और सर्दियों में प्रदूषण का स्तर खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है तथा सुप्रीम कोर्ट को भी संज्ञान लेना पड़ा।

प्रदूषण ने हमारे पारिस्थिकी तंत्र को भी प्रभावित किया है, असमय वर्षा, तापमान का बढ़ना, आंधी-तूफान, ओलावृष्टि मौसम में परिवर्तन आदि हमारे लिए संकेत हैं कि हम अब भी सुधार जाये। पर प्रभावी राजनैतिक एवं सामाजिक नियंत्रण के अभाव में धरातल पर कुछ सुधार होता नहीं दिख रहा। हम सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग तक को रोक पाने में भी विफल रहे हैं, जो हमारे नदियों-नालों को ब्लॉकज कर रहे हैं तथा इससे सड़कों पर बाढ़ के हालात पैदा कर रहे हैं साथ ही जल स्रोतों को दूषित कर रहे हैं।

कृषि उत्पादन में रासायनिक खाद एवं हानिकारक कीटनाशक पदार्थों के अति उपयोग ने जनस्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है और कैंसर, उदर रोग, त्वचा रोग के मरीजों में प्रत्याशित वृद्धि देखने को मिल रही है।

नगरीकरण एवं औद्योगिकरण ने पेट्रोल-डीजल उपयोग को बढ़ावा दिया इससे वायु-प्रदूषण की गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गयी है। साथ ही औद्योगिक एवं नगरीय वेस्ट ने हमारे जल स्रोत को विषाक्त बना दिया है। वायु एवं ध्वनी प्रदूषण के कारण पशु-पक्षी, कीट-पतंग के अनेक प्रजातियां लुप्त हो गई हैं। गौरैया, गिद्ध, चील, शेर, बाघों की संख्या अत्यधिक कम हो गई हैं। इनमें से

कुछ हमारे पर्यावरण को स्वच्छ रखते थे।

हमने धरती की जीवनदायिनी क्षमता को ही खतरे में डाल दिया है। तापमान बढ़ने से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और तटीय क्षेत्रों के डूबने की आशंका बढ़ रही है। समुद्री जलीय जीवों में सूक्ष्म प्लास्टिक माक्रोनेस पाये गये हैं जो उनके जीवन के लिए खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं। हमने पश्चिम का विकास मॉडल तो अपना लिया पर पर्यावरण संरक्षण के उपाय अपनाने से चूक गये। इससे ग्लोबल वार्मिंग का खतरा उत्पन्न हो गया है। हमें जल्द जल संकट, प्राणवायु की कमी, ध्वनी प्रदूषण तथा प्लास्टिक से आये संकट से निपटना होगा, जिसके लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। पारिस्थिकी तंत्र की भलाई ही हमें आने वाले गम्भीर संकट से बचा सकेगी। हमें प्राकृतिक स्रोतों का संयम से उपभोग करना सीखना होगा। प्रदूषण के लिए उत्तरदायी कारणों का शीघ्रतम समाधान खोजकर प्रभावी कार्यवाही करनी होगी। अन्यथा मानवता और हमारी पृथ्वी को संकट से बचाना मुश्किल हो जायेगा। पर्यावरण पर बने संगठन हमें सचेत कर रहे हैं। क्यों न हम शुरुआत करें प्लास्टिक उपयोग रोककर, जैविक खेती और प्राकृतिक कीटनाशक उपयोग करके, जल उपयोग का सही मैनेजमेंट करके, औद्योगिक नगरीय वेस्ट पदार्थों को जल स्रोतों में जाने से रोककर। हमें पाश्चात्य संस्कृति का वैदिक संस्कृति के साथ सामंजस्य बैठाकर नदी, वृक्ष, पहाड़, पशु-पक्षी को बचाने का धर्म निभाना होगा।

सात पीढ़ियों के लिए कमाकर छोड़ने के बजाए आगामी पीढ़ी के लिए स्वच्छ पर्यावरण छोड़ने पर ध्यान देना ही हमारा धर्म एवं ध्येय होना चाहिये। स्वच्छ वायु एवं जल तथा स्वच्छ पर्यावरण ही जीवन है।

-रमेश गैदर

समुद्री पानी को पीने योग्य बनाने के लिए नई तकनीक ईजाद की

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने समुद्री जल को पीने योग्य बनाने के लिए केवल 8 महीने में नई 'नैनोपोरस मल्टीलेयर्ड पॉलिमरिक मेम्ब्रेन' तकनीक विकसित की है। डीआरडीओ की कानपुर स्थित प्रयोगशाला रक्षा सामग्री भंडार और अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान (डीएमएसआरडीई) ने इसे ईजाद किया है। यह तकनीक भारतीय तटरक्षक जहाजों के लिए बनाई गई है, ताकि खारे पानी में मौजूद क्लोराइड आयनों के संपर्क में आने पर स्थिरता बनी रहे। इस तकनीक का विकास केवल आठ महीनों में पूरा किया गया है। डीएमएसआरडीई ने भारतीय तटरक्षक बल के साथ मिलकर इस मेम्ब्रेन की शुरुआती टेक्निकल ट्रायल किया है जो पूरी तरह संतोषजनक पाई गई है।

- वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
 वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
 वि/4 श्री मनोज कुमार सिरस्वा, जयपुर
 वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टॉक रोड, जयपुर
 वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
 वि/7 श्री राकेश चन्द सिर्रोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
 वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोंदिया जयपुर
 वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ेवाल, जयपुर
 वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
 वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
 वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/15 श्री दीपक सिर्रोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ेवाल, जयपुर
 वि/17 श्री योगेश वर्मा, खडगटा, टॉक रोड, जयपुर
 वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टॉक रोड, जयपुर
 वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
 वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रीमस रोड, जयपुर
 वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
 वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नौदड़, जयपुर
 वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नौदड़, जयपुर
 वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
 वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
 वि/28 श्री शंकरलाल मामोडिया, 22 गोदाम, जयपुर
 वि/29 श्री रामस्वरूप खोरगिया, जयपुर
 वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
 वि/31 श्री चैनसुख बड़ीवाल, बागरू, जयपुर
 वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
 वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
 वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
 वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
 वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
 वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
 वि/38 श्री दया प्रकाश जलान्धरा, इंदौर
 वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौरोंदिया, इंदौर
 वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
 वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
 वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
 वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
 वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
 वि/46 श्री ललित स्वरूप पोड़ेला, जयपुर
 वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
 वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
 वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
 वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
 वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टॉक फाटक, जयपुर

विशिष्ट संरक्षक

- वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
 वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
 वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्रीसगढ़
 वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्रीसगढ़
 वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
 वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
 वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
 वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
 वि/61 श्री हेमंठ सिंह गैदर, टॉक रोड, जयपुर
 वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
 वि/63 श्री गोपाललाल बानसीवाल, जयपुर
 वि/64 श्री मोहनलाल मामोडिया, जयपुर
 वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
 वि/66 श्री जगदीश कुमावत
 वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
 वि/70 श्री नान्छीलाल कुददीवाल, जयपुर
 वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
 वि/72 श्री राधेश्याम चासोलिया, दिल्ली
 वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
 वि/74 श्री मेधराज सिरस्वा, छत्रीसगढ़
 वि/75 श्री सूरजमल अनावडिया, लाल कोठी, जयपुर
 वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
 वि/77 श्री रामगोपाल खोरगिया, सोडाला, जयपुर
 वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
 वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
 वि/81 श्री अजुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
 वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
 वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
 वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
 वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
 वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
 वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
 वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
 वि/89 श्री हेमांक खडगटा, मोती डूंगरी, जयपुर
 वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
 वि/91 श्री लोकेश जहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
 वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंग, सीकर
 वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
 वि/94 श्री रामसिंह बैथालिया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
 वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
 वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
 वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
 वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
 वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
 वि/101 श्री दीपेश टी. मंडावरा, जयपुर

- वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
 वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
 वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याडवाल, नई दिल्ली
 वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
 वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
 वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
 वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याडवाल), नई दिल्ली
 वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
 वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
 वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
 वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
 वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोडिया), जयपुर
 वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
 वि/116 श्री जगेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
 वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
 वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
 वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
 वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बेरा), झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
 वि/123 श्री राजेश धुंधारिया, डूडलोड कॉलोनी, जयपुर
 वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
 वि/125 श्री उमदे सिंह नदीवाल पुत्र श्री जी.एस. नदीवाल, जयपुर
 वि/126 श्री रामलाल बैथालिया
 वि/127 श्री लोकेश बालोदिया, जयपुर
 वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
 वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
 वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
 वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्धरा, जयपुर
 वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
 वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
 वि/134 श्री महेंद्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
 वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
 वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
 वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
 वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
 वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
 वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
 वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
 वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
 वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
 वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
 वि/145 श्री राकेश कुमावत, (आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
 वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
 वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, राकड़ी, जयपुर
 वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
 वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
 वि/150 श्री कैलाश घोड़वड़, सूरत
 वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
 वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
 वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर

“कुमावत इंडिया” पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

- 20 अप्रैल श्रीमती शांति देवी बासनीवाल, जोबनेर, जयपुर
 21 अप्रैल श्रीमती छोटी देवी सारडीवाल, कागनजी नाडा, सिलोरा, किशनगढ़
 21 अप्रैल श्री जुगल किशोर बबेरीवाल, चन्द्रबरदाई नगर, अजमेर
 24 अप्रैल श्री मांगीलाल राजोरिया, गोविन्दगढ़
 25 अप्रैल श्री मुरलीधर बिवाल ग्राम सेवक, रैनवाल रोड, चौमूं
 25 अप्रैल श्रीमती चौसर देवी कुमावत (मानगिया), उदयपुर
 25 अप्रैल श्री लाल चन्द कुमावत रेणीवाल, गोविन्दपुरा, सांगानेर
 26 अप्रैल श्रीमती छोटा देवी राजोरिया, किसान मार्ग, टॉक फाटक, जयपुर
 28 अप्रैल श्री भूर सिंह छापोला, रामनगर, सोडाला, जयपुर
 28 अप्रैल श्रीमती रेशमी देवी कारगवाल, रिंगस
 28 अप्रैल श्री दयाराम देवतवाल, बस्सी, जयपुर
 29 अप्रैल श्रीमती चांद देवी धमगिया, सोडाला, जयपुर

- 29 अप्रैल श्री लाल चन्द नेमीवाल, बैरों ढाणी, बोराज
 30 अप्रैल श्री सेडूराम बारावाल, चौमूं, जयपुर
 1 मई श्री चन्द्रेश कुमावत घोड़ेला, सामोद
 1 मई श्री मदनलाल कुमावत थावलया, शाखीनगर, जयपुर
 3 मई श्री कैलाश चन्द भोड्या, धोली मण्डी, चौमूं
 4 मई श्रीमती लीला देवी अजमेरा, कनकपुरा, जयपुर
 5 मई श्री सजय मालिया, सिलोरा, किशनगढ़
 5 मई श्रीमती तिजू देवी घासोलिया, चूरू
 5 मई श्रीमती पार्वती देवी धमागिया, निम्बाहेड़ा
 5 मई श्रीमती प्रभा देवी जलान्धरा, प्रतापनगर, जयपुर
 6 मई श्रीमती कमला देवी जलान्धरा, टॉक फाटक, जयपुर
 6 मई श्री वैदिक कुमावत (डुगू) देवतवाल, लालकोठी, जयपुर
 6 मई श्रीमती सुशीला देवी निरागिया, कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर
 7 मई श्री छीतरमल कुमावत पुत्र स्व. गंगाबक्श, जयपुर
 13 मई श्री शक्तिनारायण खोवाल, मदनगंज किशनगढ़
 16 मई श्री रामचन्द्र देवतवाल गुड़ा बैरसल वाले, सीकर रोड, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
योगेश	M.Com.	Self Agency	30.6.97	5'7''	देवतवाल	मामोडिया	बालोदिया	अनावडिया	8058801772	जयपुर
अनुभव	B.E. (EE) MBA	Pvt. Ltd.	14.5.97	5'6''	घोड़ेला	कारगवाल	नीमीवाल	गैदर	9309061493	जयपुर
राजू (तलाकशुदा)	M.A. (Painting)	Teacher	9.2.84	5'6''	मारवाल	जलान्द्रा	धमुनिया	नेनीवाल	9828227883	जयपुर
तेजकरण	II Year	Private Job	30.1.90	5'9''	कुलचाणिया	बबेरीवाल	खाटूवाल	घोड़ेला	9982004011	जयपुर
पवन	ITL.B.A., MBA	Event Management	3.6.94	5'7''	कुंडलवाल	नीमीवाल	सोकिल	सिरस्वा	9462597382	जयपुर
हिमांशु	12th	Photography	21.9.89	5'6''	सिरोहिया	खोरानिया	होदकास्या	घोड़ेला	9309370027	जयपुर
हर्षित	B.Tech. (Civil), M.E.	P&G Pune (35 LPA)	30.11.96	6'1''	मोरवाल	अडानिया	कटूमरा	कारगवाल	9414306725	अलवर
राहुल	B.Tech.(NIT)	Central Govt. Service	9.6.95	5'10''	सिरस्वा	भोडीवाल	माचीवाल	बडीवाल	9829027510	जयपुर
सचिन	MBA	Pvt.	11.8.92	5'2''	पिलोदिया	अजमेरा	कुचेरिया	मोरवाल	7879969166	नीमच
प्रदीप	B.A.	Building Cons.	28.7.94	6'1''	अनावडिया	मारवाल	सिरस्वा	खोवाल	9828278643	जयपुर
आयुष	B.A. (ITI)	Pvt. Job.	11.9.97	5'6''	धनारिया	घोड़ेला	तूनवाल	किरोडीवाल	9829951613	अजमेर
राधेश्याम (तलाकशुदा)	M.Com. M.A.	LIC Advisor	1.6.87	-	कांकर	अण्डावडिया	सिरस्वा	देवतवाल	9887151742	-
अर्पित	M. A.	Land Dovelper	2.10.98	5'10''	मावर	मोरवाल	बेडवाल	मारवाल	9351222230	अजमेर
जितेन्द्र	B.A.	Self Mart Shop	25.3.94	5'8''	टोक	लखासर	छापीला	घुंघाड़ा	9978607121	गंगानगर
संजू	M.Com.	Manager	9.1.96	5'4''	राजोरिया	होदकास्या	सिरोहिया	तुंदवाल	9784811266	जयपुर
गणेश	B.A.	Work shop	5.6.97	5'9''	दम्बीवाल	बबेरीवाल	किरोडीवाल	मामोडिया	9784416795	जयपुर
पंकज	10th	Textile Salesman	7.7.89	5'9''	नराणिया	बडीवाल	खंडारिया	तुंदवाल	6377027649	जयपुर
अक्षय	B.A.	ATS (5.4 LPA)	9.9.95	5'7''	राजोरिया	खण्डारिया	सिरोहिया	भोरुदिया	9314396355	जयपुर
अजय	B.Sc.(Catering)	Dining Supervision inDubai	2.12.96	5'7''	घोड़ेला	खण्डेरीवाल	मारवाल	मारोठिया	9828995333	दुबई

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
मनीषा (नीशु)	M.Com. (ABST)	--	14.7.94	5'3''	बबेरीवाल	माचीवाल	देवतवाल	सिरसवा	8824390772	जयपुर
तेपीक्षा	Dip. Graphic Design	--	18.5.2001	5'2''	गैदर	होदकास्या	राहोरिया	तूनवाल	8619256524	जयपुर
अनिता	M.Com., LLB, CS	Pvt. Job.	4.8.89	5'5''	कैक्टया	मन्डालिया	बनावडिया	बैरा	9828121735	उदयपुर
रिया	B.Com., LLB	Pvt	7.8.98	5'4''	मारवाल	बडीवाल	खोवाल	कारगवाल	9829060893	जयपुर
भाग्यश्री	B.Tech (CS)	--	7.11.94	5'4''	अनावडिया	बालोदिया	सिधीवाल	पारमवाल	9460709447	ब्यावर
सन्जू	M.A., B, Lib.	--	15.8.95	5'4''	कुदाल	मारवाल	जायलवाल	मोरवाल	8104344305	अजमेर
रितू	M.Com., Tally(GST)	--	18.8.97	5'2''	देवतवाल	मारवाल	बबेरीवाल	नागा	9829487729	अजमेर
पूजा	M.Com., MBA	Pvt	29.8.95	5'5''	कारगवाल	अनावडिया	सारडीवाल	खोराया	9977777083	ब्यावर
डॉ. पूजा	B.A., M.S.	Persunig MD	23.3.97	5'1''	खोवाल	जेठीवाल	बबेरीवाल	मारवाल	9416535732	जयपुर
शैली	MCA	Pvt.	31.7.99	5'2''	घोड़ेला	पारमवाल	सिरस्वा	कुकड़वाल	7023562620	जयपुर
प्रियंका	B. Com.	Job Genpact	28.12.90	5'2''	खोवाल	केक्टया	भडानिया	दूरान	9351808046	जयपुर
प्रियांशी	M. Com	Pvt. Teacher	13.12.99	5'2''	बालोदिया	मारवाल	धुंधारिया	बडीवाल	9463755967	जयपुर
मेधा	B.Sc., M.Sc..	FCI (GOI)	17.7.97	5'2''	बारावाल	मारोठिया	बडीवाल	बालोदिया	9887158178	जोबनेर
श्रेया	B.Sc.	--	26.6.2002	5'2''	जलान्द्रा	मामोडिया	होदकास्या	कारगुवाल	9413748654	फुलेरा
किरन (तलाकशुदा)	M.A.	Makeup Artist	14.4.95	5'5''	जालवाल	काकर	भासोदा	बाथरा	7976790926	कोटा
मोनिका	M.Com.	--	13.6.94	5'1''	पारमवाल	घोड़ेला	लोहरवाडिया	खाटूवाल	9351007736	ब्यावर
सन्जू	M.Com.	Production Manager	9.1.96	5'4''	राजोरिया	होदकास्या	सिरोहिया	तोदवाल	9787811266	जयपुर
मानसी	B.Tech.(Honrs)	Soft. Eng.	20.2.2000	5'2''	जायलवाल	तौदवाल	घोड़ेला	बोडीवाल	9413185877	चित्तौड़गढ़
पूजा	M.Com.	--	24.6.95	5'3''	घोड़ेला	बेडवाल	मारोठिया	मारवाल	9024158919	सीकर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम “कुमावत इंडिया पत्रिका”

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि ‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुनः भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना ‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि ‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mail: Nkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/30 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

‘कुमावत इण्डिया’ पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं।

- सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ ‘कुमावत’ अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।
2. इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में निःशुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

‘कुमावत इंडिया’ पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. लालकोठी बापूनगर-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. जयपुर शहर-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. सांगानेर-श्री भीमसिंह सिरोहिया,मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. मालवीय नगर-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. 22 गोदाम-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं.

4 मो. 9414052736

8. आदर्श नगर, तिलक नगर-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. दहमी कलां, बगरू-श्री चैनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. करधनी-कालवाड़ रोड-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड़ रोड, मो. 9828063267
11. टोंक फाटक- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. ब्यावर-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. दिल्ली-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. फुलेरा-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. सोडाला -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

जयपुर क्रिएटिविटी ग्रुप द्वारा मोहन बालोदिया को लाइफटाइम अचिवमेंट ट्राफी



जयपुर क्रिएटिविटी ग्रुप ने अपना चौथा स्थापना दिवस जय क्लब में मनाया। इसकी संस्थापक प्रो. अमला बत्रा ने सभी सक्रिय सदस्यों को स्मृति चिह्न भेंट किए। यह ग्रुप रचनात्मकता को बढ़ावा देने और जरूरतमन्द लोगों की मदद करने का कार्य करता है। ग्रुप द्वारा वॉलीवुड गानों के सदाबहार गायक मोहन कुमार बालोदिया को लाइफ टाइम अचिवमेंट ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री मोहन बालोदिया ने अपनी मधुर आवाज में सिने गायकों के गाने गाकर ग्रुप के सदस्यों का मनोरंजन भी किया।



हमारी लाडली

कुमारी शुभी कुमावत (घोड़ीवाल)

द्वारा CBSC परीक्षा वर्ष 2025 में
12वीं कक्षा में 96.40 प्रतिशत अंक
प्राप्त कर उत्तीर्ण होने पर

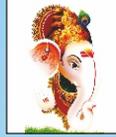
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु

अम्मा-बाबा : राजकुमारी-लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल
(कोषाध्यक्ष, 'कुमावत इंडिया' पत्रिका) 9549656438,
मम्मी-पापा : प्रीति-सुरेन्द्र बाबू घोड़ीवाल 7976252918,
चाची-चाचाजी : शशि-मनीष घोड़ीवाल 9672980118,
बहन- भाई : शिवी एवं लविन

7/218, मालवीय नगर, जयपुर-302017

श्री गणेशाय नमः



रामरतन कुमावत

आंकित स्टोन एण्ड मार्बल्स

उत्तम क्वालिटी के कोटा स्टोन, मार्बल, ग्रेनाइट
वाल टाईल, फ्लोर टाईल, केमिकल, ग्राउट, जोधपुर के बाई बारने
सीमेंट जाली आदि के थोक व खुदरा विक्रेता

आंकित कुमावत मो. 8003950899 | रामरतन कुमावत मो. 9829681633, 9887295600



न्यू रीको रोड, N.H.8, दहमी बालाजी, बगरू (जयपुर)

मुरली नाईक ऑपरेशन सिंदूर में शहीद

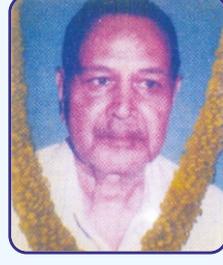


श्री श्रीराम नाईक (कुमावत) के ज्येष्ठ पुत्र जवान मुरली नाईक (कुमावत) 09 मई 2025 को सुबह 3 बजे भारत-पाकिस्तान युद्ध में अदम्य साहस का परिचय देते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

ईश्वर इनकी आत्मा को शांति दे व इनके परिवार को इस वज्रपात को सहन करने की शक्ति दे। वंदे मातरम। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से जवान मुरली नाईक को सादर श्रद्धांजलि।

110 वर्षीय आनन्दी बाई पालड़िया का निधन

श्रीमती आनन्दीबाई पालड़िया ग्राम राजोदा बालोदा की वयोवद्ध महिला जिनका 110 वर्ष की आयु में हाल ही स्वर्गवास हो गया है। ये धर्मपरायण महिला थी तथा अपने निधन से पूर्व लगभग 1 किलो वजनी चांदी के कड़े गांव के श्रीराम मंदिर को भेंट करने का संकल्प छोड़कर के गई हैं। इनके निधन से कुमावत समाज में शोक की लहर व्याप्त हो गई है। इस धर्मपरायण महिला आनन्दी बाई पालड़िया को 'कुमावत इंडिया' पत्रिक की ओर से सादर श्रद्धांजलि।



श्रद्धांजलि

स्वर्गवास 26.5.2002

स्व. श्री आनंदीलाल जी लखेसरा

की 23वीं पुण्य तिथि पर सादर श्रद्धांजलि

श्रद्धान्वत

पुत्र-पुत्रवधु : नारायण प्रकाश-बसंत
पुत्री-दामाद : विमला-प्रेमचंद जी
पौत्र-पौत्रवधु : मधुर वर्मा-शिवाजी,
पौत्री-पौत्री दामाद : रितु-सुरेश जी, कविता-नरेश जी
कुसुम-निशांत जी
पड़पौत्री : निर्विता

एफ-24, 4th एवेन्यू, लाल बहादुर नगर प.,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर मो. 9414238619

जय सियाराम



जन्मतिथि :

20 अगस्त 1944

द्वितीय पुण्य तिथि पर (श्रद्धांजलि)

जय सियाराम



देवलोक गमन :

21.06.2023

स्व. श्री चिरंजी लाल जी मारवाल (कुमावत)

(वरिष्ठ प्रारूपकार, MNIT)

सुपुत्र स्व. श्री जोधराज जी मारवाल (चित्रकार)

“पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः। पितरि प्रीतिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवता।।”

चिरस्मरणीय समाज सेवी बहुमुखी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्व. श्री चिरंजी लाल जी मारवाल कुमावत समाज के अग्रपुरुष थे। आप सम्पूर्ण परिवार के लिए अथाह शक्ति के स्रोत थे। आपके जीवन ने हमें सत्य, परिश्रम एवं निःस्वार्थ कर्म का मार्ग दिखाया। आपका स्नेह सद्व्यवहार सेवा भावना ईश्वर भक्ति प्रेरणा दायक जीवन सदैव हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा। आपकी पावन स्मृति को मन में संजोए हम इस मार्ग पर निरंतर चलते रहेंगे। आपका विशाल व्यक्तित्व हमें जन सेवा के लिए सदैव प्रेरित करता रहेगा।

श्रद्धान्वत

आपकी द्वितीय पुण्य तिथि पर समस्त मारवाल परिवारजन एवं मित्रगण सजल नयनों से सहृदय शत शत नमनकरते हुए सादर भावपूर्ण स्मरण एवं अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

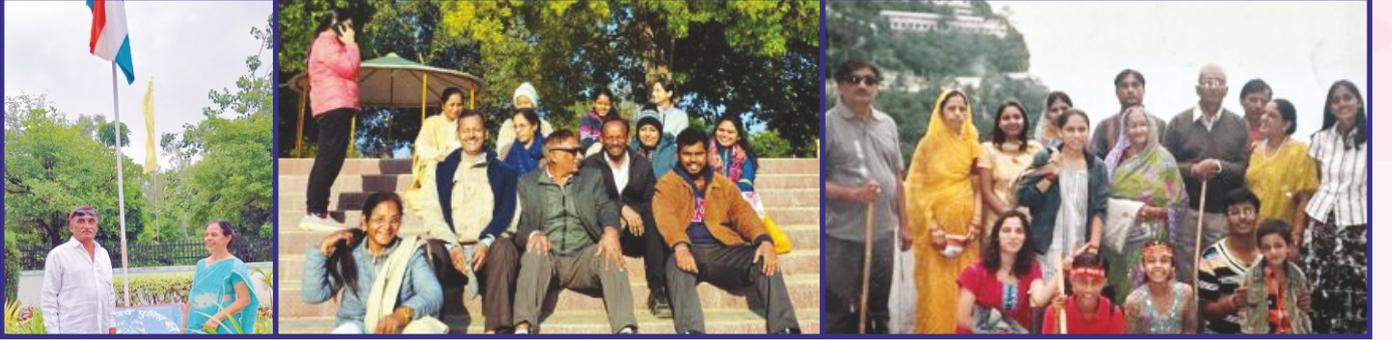
धर्मपत्नी : कैलाश देवी कुमावत **पुत्र** : शोभित मारवाल **पौत्री** : भक्ति मारवाल **पुत्री-दामाद** : स्व. प्रेमलता-मोहनलाल जी, सीमा-राजकुमार जी, अनिता-राजेश जी, विजयलक्ष्मी मारवाल, **दोहिता-दोहिता वधु** : नीतीश-दीक्षा प्रिया **दोहिते** : अभिषेक, सुयोग, दक्ष, पवित्रम दोहिती-दामाद : मेधा चिराग जी **भतीजा-भतीजा वधु** : उम्मेद सिंह-बीना, गुमान सिंह - संतोष

प्लॉट नं. 217, पार्श्वनाथ नगर, टर्मिनल 1 एयरपोर्ट रोड, सांगानेर, जयपुर-302029 (राज.) सम्पर्क सूत्र 7976063230, 9352564779



हमारी प्रिय गौरवशाली डॉ. हर्षिता बासनीवाल

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF)
प्रयागराज में M.O./Asst. Commandant पद पर
अगस्त, 2024 में स्थाई सेवा (Confirmd Service)
की हार्दिक शुभकामनाएं एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु
मंगल शुभकामनाएं



माता-पिता : श्रीमती रश्मि एवं
प्रमोद बासनीवाल से.नि. AAO एवं
पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भा.कु.क्ष. महासभा

श्रीमती चेतना, कमल सिंह, संजय, मंजू, कृतिका,
याना, वैष्णवी, नानू, कान्हा, चित्रा (दिल्ली),
डॉ. प्रिया मारवाल

स्व. श्री गुलाबचन्द-सावित्री, प्रमोद-रश्मि, दीपक-नेहा,
किरण, गरिमा, श्रद्धा, सिद्धि, हर्षिता, दिव्य, सिद्धार्थ
अपूर्व, गौरव, पवन

सदी के महाकुंभ अवसर पर विशेष सुविधायें (VIP स्नान) की झलकियां



शुभेच्छु

दादा-दादी : स्व. श्री गुलाबचन्द वर्मा-श्रीमती सावित्री
देवी, नाना-नानी : स्व. अमरसिंह वर्मा-स्व. श्रीमती
हेमलता (देहरादून वाले), छोटे दादा-दादी :
हरिसिंह-सीता, मोहन सिंह-सुनीता, लक्ष्मण, चाचा-
चाची : दीपक-नेहा, कुलदीप-माधुरी, लेखराज-
खुशबू, अक्षय-हीना, मामा-मामी : विजय सिंह-
लक्ष्मी, कमल सिंह-चेतना, संजय सिंह-मंजू,
गोविन्द-माही एवं पवन, बुआ-पूफा : किरण-
बृजगोपालजी, निशा-संदीपजी, यशु-चन्द्रप्रकाशजी,
बीनू-योगेशजी, मौसी-मौसा : मंजू-भंवरसिंह
नांदीवाल, बीना-कुँअर दीपक (दिल्ली), भाई-
भाभी : सिद्धार्थ-प्राची, अपूर्व-कीर्ति, दिव्य-इशिता
एवं गौरव, दीदी-जीजाजी : सिद्धि-अमित जी, भाई-
बहन : श्रद्धा, गरिमा, पारूल, हिमांशु, राहुल, आयुश,
कृतिका, रूनझुन, वैष्णवी, मनस्वी एवं समस्त परिवार

डी-18, रामनगर, शास्त्री नगर, जयपुर-302016 मो. 9828501055

कुमावत इंडिया, मई 2025



Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976



Speciality :

1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts
3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art
5. Cultured marble
6. Soft stone
7. Miniature Art

Showroom :

"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :

F-31/A, Lal Bhadur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

SP CONSTRUCTION

**Building INDIA'S
Construction**



SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in

E-Mail: info@spconst.co.in



**ADMISSION
OPEN**

Vijay Anand International Academy

Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri,
Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve
the Best Education

**CCTV
SURVEILLANCE
24X7**



Director
**Deendayal
Kumawat**



Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)



Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)